

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182189

UNIVERSAL
LIBRARY

UP-24-4-69-5,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No.

H83
C49L

Accession No. P. G. H287

Author

पतुरसेन , आचार्य

Title

कालपानी 1959

This book should be returned on or before the date last marked below

लाल पानी

लाल पानी

आचार्य चतुरसेन

मूल्य—दो रुपया पचास नया पैसा

प्रकाशक—
जय प्रकाशन
कबीरचौरा, वाराणसी ।

प्रथम संस्करण, सितम्बर १९५६
(सर्वाधिकार ग्रन्थकार के आधीन)

मुद्रक—
वैजनाथ प्रसाद
कल्पना प्रेस
रामकटोरा रोड, वाराणसी ।

दो शब्द

यह उपन्यास सावन्ती युग के रक्त भरे दिनों की एक रोमाञ्चकारी सत्य ऐतिहासिक घटना पर आधारित है। उपन्यास में कच्छ के प्रसिद्ध वीर खंगारजी का चरित्र व्याख्यात है। इस समय तक भी कच्छ का कोई सांगोपांग अच्छा इतिहास उपलब्ध नहीं है। बाम्बे गजटियर की पाँचवी जिल्द में कच्छ के इतिहास पर कुछ प्रकाश डाला गया है तथा आर्कियों लाजीकल सर्वे की रिपोर्ट में थोड़ा छुट-पुट वर्णन है। इलियट ने 'हिस्ट्री आफ इण्डिया एज टोलड बाई इट्स' और 'हिस्टोरियन्स' नामक इतिहास ग्रन्थ में कच्छ राज्य का थोड़ा वर्णन किया गया है। मिसेज पोस्टन्स के पत्र और 'रैण्डम स्केचेज' नामक ग्रन्थ में कच्छ का यत्किंचित विस्तृत वर्णन है। भारतीय लेखकों में आत्माराम केशवजी द्विवेदी ने एक छोटा-सा 'कच्छ देश का इतिहास' ग्रन्थ गुजराती में लिखा है। इन्हीं सब ग्रन्थों के आधार पर इस उपन्यास की आधार भूमि है। श्री केशवजी जोशी ने खंगारजी के चरित्र पर आधारित एक उपन्यास भी लिखा था। उसमें कुछ दन्तकथाओं का भी आश्रय लिया था तथा कुछ कल्पना का भी उपयोग किया था। इसके बाद ठक्कर नारायण किसनजी ने एक उपन्यास 'कच्छनो कार्तिकेय' नामक लिखा था। इन्हीं सब कथा-वस्तु पर आधारित यह उपन्यास लिखा गया है। विशेषकर अन्तिम ग्रन्थ को आसुरूप माना गया है। अतः इन सब आधार सामग्री के लेखकों का मैं ऋणी हूँ।

ज्ञानधाम प्रतिष्ठान

दिल्ली-शहादरा

ता० १-८-५६

}

—चतुरसेन

१

यह घटना अब से कोई पाँच सौ बरस पूर्व घटित हुई थी। ठीक-ठीक तारीख बताना तो सम्भव नहीं है, परन्तु ई० सन् १४७० और १५०० के बीच यह घटना घटित हुई। उन दिनों काठियावाड़ के कच्छ प्रान्त में अनेक छोटे-बड़े राजा, भायात और गिरासिए ठाकुर थे। एक गाँव का ठाकुर भी बहुत हद तक एक स्वतन्त्र राजा की भाँति रहता था। उसकी इच्छा और वचन ही कायदा-कानून होता था। प्रत्येक बात का फैसला तलवार से होता था। वे दिन ही ऐसे थे।

कच्छ के अनेक राजाओं, भायातों और ठाकुरों में दो राजा प्रमुख थे। एक लखियार वियरा के जाम भीम जी और दूसरे पथरगढ़ के जाम रावण सिंह। दोनों राजा रिश्ते में भाई-बन्द थे। पर दोनों राज्यों की सीमाएँ मिली होने के कारण बात-बात में तलवार खिंची रहा करती थी। रावण सिंह के पिता का नाम जाम लाखा था। बागड़ में उनकी

ससुराल थी। एक बार जब वे अपनी ससुराल से वापस लौट रहे थे तब राह में कुछ ठाकुरों ने पुराने बैर के कारण, उन्हें घेर कर मार डाला। पिता के परलोकवासी होने पर रावणसिंह सिंहासनारुढ़ हुआ। उसने पिता की उत्तर क्रिया बड़ी धूम-धाम से की। उस अवसर पर रावणसिंह ने भारी यज्ञ किया। यज्ञ में आस-पास के सब राजा, ठाकुर, भायात, गिरासिए आए परन्तु वियरा के जाम भीमजी अपने बड़प्पन और बैर-भाव के विचार से नहीं आए। रावणसिंह के मन में यह काँटा चुभ गया। पर वह कूटनीतिज्ञ, कुटिल, और धूर्त युवक था। अपमान के घूँट को पी गया। थोड़े दिन बाद जाम भीमजी का स्वर्गवास हो गया। तब रावणसिंह बड़ी ममता से उनकी उठावनी के अवसर पर आया। और नये तरुण जाम हम्मीर से, जो भीमजी का पुत्र था, बड़े प्रेम और आधीनता से मिला। बहुत प्रेम और आदर प्रकट किया। अन्त में जब विदाई का समय हुआ, तब स्नेहसिक्त भाषा में उसने कहा:— “हमारे और आपके पूर्वजों ने राज्य के सीमा-संबंधी झगड़े-टंटों में फँस कर और लड़कर उभय पक्ष की बहुत हानि की है, इसलिए अब मैं झगड़ने वाले सब स्थान स्वेच्छा से छोड़ कर आपके अर्पण करता हूँ। और आप से भी विनती करता हूँ कि आप आनन्द से लखियार वियरा में राज्य करें। और मुझे अपना चिर-किंकर समझें। इसी में उभय पक्ष की शोभा है।” रावणसिंह के ये वचन सुन तरुण हम्मीर बहुत प्रसन्न हुआ। और रावणसिंह को सम्मान-मान देकर विदा किया। इसके बाद भी रावणसिंह ने समय-समय पर बहुमूल्य भेंट-सौगात भेज कर और विनय-पत्र लिखकर जाम हम्मीर के मन में घर कर लिया और एक अच्छी मैत्री स्थापित कर ली।

२

लखियार वियरा आज भी कच्छ में एक छोटा सा गाँव है। पर उन दिनों वह कच्छ की राजधानी थी। जाम हम्मीर ही तब कच्छ के धनी कहलाते थे। वियरा राजनगर के नाम से प्रसिद्ध था। वह एक समृद्ध नगर था।

जाम हम्मीर की पाँच संतानें थीं। बड़ा पुत्र अलैयाजी था, परन्तु उसकी माता एक खवास-रबायत थी। इससे हम्मीर ने दूसरे पुत्र खंगारजी को युवराज बनाया था। खंगारजी रानी के पेट से पैदा थे। अलैयाजी की सगी बहन कमाबाई थी। कच्छ में उसके रूप-यौवन की बड़ी चर्चा थी। खंगारजी के दो सगे भाई थे—सायबजी और नायबजी। इस प्रकार हम्मीर के एक पुत्र और एक पुत्री रबायत से और तीन पुत्र रानी से थे।

खंगार जी को युवराज-पद दिया गया, इसका भारी उत्सव वियरा में मनाया गया। सारा नगर और राजप्रसाद सजाया गया। कच्छ के सभी

राजा, भायात, ठाकुर, गिरासिए इस अवसर पर वियरा में आए। राजधानी में बहुत धूम-धाम और चहल-पहल मच गई। इस अवसर पर जाम रावणसिंह भी बहुत-सी भेंट-भलाई लेकर मुबारकवादी देने आया था। परन्तु गुप्त रूप से उसने एक षड़यंत्र किया कि इसी अवसर पर गुजरात के सुलतान मुहम्मद बेगड़ा को वियरा पर चढ़ा लाया। अभी हम्मीर जाम मेहमानों की आवभगत ही में लगा था कि उसको सूचना मिली कि गुजरात का सुलतान मुहम्मद बेगड़ा बड़ी भारी सेना लेकर वियरा पर आ धमका है। यह समाचार वज्रपात की भाँति राजधानी में फैल गया। जाम रावण ने बहुत चिन्ता और क्रोध प्रकट किया तथा हम्मीर को युद्ध में भिड़ जाने के लिए उसकाया। सुलतान मुहम्मदशाह बेगड़ा बड़ा विकराल पुरुष था। वह नित्य एक मन भोजन करता था। सौ केले, आधा सेर शहद और बहुत-सी सटर-पटर चीजें तो वह कलेवे में ही खा जाता था। एक बड़े बैल के सींग के समान उसकी मूँछें थीं। उसने अनेक युद्ध जीते थे। चापानेर और जूनागढ़ के दुर्जय दुर्ग जीत कर उसने बेगड़ा की उपाधि पाई थी। उसीने सिंध के सब सूमरा और सोढ़ा राजपूतों को मुसलमान बनाया था।

हम्मीर जाम ने अपने वृद्ध दीवान भूधरशाह से परामर्श किया और उसी को बहुत सी भेंट लेकर सुलतान के पास भेजा। भूधरशाह ने अपनी वचन चातुरी से सुलतान को प्रसन्न कर लिया। और यह तय पाया कि यदि जाम हम्मीर अपनी पुत्री कमाबाई से सुलतान का विवाह कर दे तो वह बिना युद्ध किए लौट जाएगा और उसे और भी इलाके देगा। जाम हम्मीर ने निरुपाय यह शर्त स्वीकार की। धूम-धाम से राजपुत्री का सुलतान से विवाह हो गया। और वह नई बेगम कमाबाई, उसके भाई राजपुत्र अलैयाजी तथा बहुत-सा दान दहेज, दास-दासी लेकर वापस गुजरात लौट गया।

इस मामले में भी रावणसिंह ने बहुत दौड़ धूप और आत्मीयता प्रकट की। और जब इस विपत्ति से पार पाकर जाम हम्मीर ने सब मेहमानों को विदा किया तथा जब जाम रावण विदा होने लगा, तब उसने बहुत-बहुत प्रेम और आधीनता प्रकट करके कहा कि आप एक बार राज-परिवार सहित मेरे गाँव में पधार कर मेरे घर को पवित्र कीजिए और मुझे कृत-कृत्य कीजिए। जाम हम्मीर ने कृतज्ञता और प्रसन्नता पूर्वक रावण का यह निमंत्रण स्वीकार किया।

३

छुछरबूटा जाम हम्मीर का पुराना विश्वासी नौकर था। वह हम्मीर के पिता के समय का नौकर था। उसने हम्मीर को गोद भी खिलाया था और हम्मीर के पुत्रों को भी। यह वृद्ध सेवक भारी राजभक्त, बुद्धिमान और धर्मात्मा था। जाम रावण की दुरभिसन्धि को वह खूब जानता था। हम्मीर को उसने बहुत समझाया कि वह इस धूर्त रावण का निमन्त्रण स्वीकार न करे और बिमारी का बहाना करके इसे टाल दे। उसने स्पष्ट कहा कि जाम रावण के गाँव में जाकर हममें से कोई भी जीता नहीं लौटेगा। परन्तु जाम हम्मीर ने उसकी बात हँसी में उड़ा दी। और जब उसने देखा कि राजा राजपुत्रों सहित दुश्मन के घर जाने को तैय्यार है, तब उसने भी उनके साथ ही जाने का निश्चय कर लिया। खतरे का पूरा सामना करने और काल के मुँह में जाने की पूरी तैयारी की। उसने बेटों, पोतों और परिवार के बड़े बूढ़ों को इकट्ठा करके गुप्त

रूप से कहा कि मैं अपने धर्म के लिए राजा के साथ बैरी के घर जा रहा हूँ। जहाँ से हमारे जीता लौटने की बहुत कम संभावना है। सो तुम होशियार रहना और भीर पड़ने पर अपने धर्म को नहीं छोड़ना और कदाचित् मैं या राजा बैरी के घर से जीते वापस न लौटे, तो तुम मौका पाकर बैरी से हमारे प्राणों का बदला लेना। इतना कह कर उसने भली-भाँति अपने को हथियारों से सज्जित किया, दो दो तलवारें बाँधी और साँडनी पर सवार हो राजा के साथ शत्रुपुरी को चला। जाम रावणसिंह ने राजा हम्मीर की बड़ी भारी खातरि और सेवा की। सारे शहर को सजाया। बड़े-बड़े नाच-रंग, खेल-तमाशे और गाजे-बाजे का जुगाड़ किया। शाम को नाच रंग की महफिल जुड़ी। अवसर पाकर रावण ने हाथ जोड़ कर हम्मीर से कहा—“आप हमारे महाराज हैं और हम आपके सेवक। सेवा और राजनिष्ठा ही हमारा धर्म है। उसी का मैंने पालन किया है। सिंहासन, राज्य, राजा, राज-परिवार और राज्याधिकारियों की एक निष्ठा से सेवा करना मुझ आधीन का धर्म है, और हमारी सेवा प्रेम से स्वीकार करना आपका कर्तव्य है। आपके पधारने से हमारा कुल उज्ज्वल हुआ और हमारा घर पवित्र हुआ। अब रसोई रखी सखी जैसी बन पड़ी है, तैयार है। कृपा कर आप महाराज और सब सरदार भोजनालय में पधारिये।”

जाम रावणसिंह ने हाथ जोड़ कर इस प्रकार नम्रता से विनती की कि जिसे सुन कर जाम हम्मीर और सब सरदार हँसते हुए और रावण की प्रशंसा करते हुए उठकर भोजन के लिए अटाले की ओर चल दिए। रावणसिंह ने गाँव के बाहर एक विशाल मैदान में डेरे-तम्बू और कनातें लगा कर काफी धूम-धाम से हम्मीर जी का उतारा किया था। खाने-पीने और दूसरे मौज-मजा के प्रबन्ध भी वहीं थे। जाम हम्मीर को रावण और उसके सरदारों ने एक सुसज्जित तम्बू में ले जाकर उत्तम आसन पर

बैठाया । रावण भी एक आसन पर बैठा । दूसरे तम्बुओं में और सरदार बैठे । सेवकों ने सोने के थालों में विविध पकवान और भोज्य पदार्थ हम्मीर और रावण के सम्मुख ला रखे । जाम रावण ने हाथ जोड़ कर आधीनता से राजा से भोजन करने का अनुरोध किया । हम्मीर ने अभी ग्रास पर हाथ डाला ही था कि तम्बू में चारों द्वारों से चार जल्लाद हाथों में नंगी तलवार लिए घुस आए और हम्मीर पर टूट पड़े । जाम रावण उछल कर खड़ा हो गया और देखते-देखते हम्मीर के टुकड़े-टुकड़े कर डाले गए । चारों ओर मार-काट मच गई और कुछ ही क्षणों में हम्मीर के सब साथी भी काट डाले गए । अभी कुछ क्षण पहले जहाँ जश्न मनाया जा रहा था, वहाँ अब तड़पती लाशें और खून का गारा चारों ओर नजर आ रहा था ।

४

छच्छरबूटा बड़ा दूरदर्शी पुरुष था। वियरा में ही जब उसने यह देख लिया कि राजा अपने हठ पर तुले हुए हैं और रावण के यहाँ जरूर जाएंगे, और कुमारों को भी साथ ले जाएंगे तब उसने रानी से सलाह करके रातों रात छोटे कुमार नायबजी को एक साँडनी सवार के साथ उसके नाना के घर भिजवा दिया। राजा युवराज खंगारजी और द्वितीय कुमार सायबजी के साथ रावणसिंह के गाँव की ओर खाना हुए। मार्ग में पिंजोड़ नाम का एक गाँव आया। वहाँ के ठाकुर अजाजी जाम हम्मीर के भायात और सम्बन्धी थे। उनकी रानी हम्मीर की रानी की सगी बहन थी। उन्होंने जाम हम्मीर और उनके राजकुमारों का बड़ा सत्कार किया और छच्छरबूटा के संकेतों से हठ करके एक रात अपने घर ठहरा लिया। रात को एकान्त में छच्छरबूटा ने अजाजी को सारी हकीकत समझा दी। अजाजी भी कुछ-कुछ रावणसिंह के मनसूबों को समझते थे।

छुछुरबूटा के साथ अजाजी और उनकी रानी ने गुप्त सलाह कर आग्रह करके दोनों कुमारों को अपने पास रोक लिया। इस प्रकार रावण के गाँव में अकेले जाम हम्मीर दस बारह मनुष्यों और छुछुरबूटा के साथ पहुँचे थे। चलते समय अजाजी की रानी ने एकान्त में छुछुरबूटा से कहा कि जो तुझे दगाबाजी का तनिक भी सन्देह दिखाई दे तो तू साँडनी पर सवार होकर सीधा यहाँ आ पहुँचना।

अब जब यहाँ मार-काट मची तब छुछुरबूटा की ओर किसी का भी ध्यान नहीं गया। वह भोजन करने भी नहीं बैठा, वह सबकी नजरों से छिप कर एक ओर बैठ गया था। उसकी आँखों के सामने उसके देखते ही देखते राजा के टुकड़े-टुकड़े कर डाले गए और सब सरदार मौत के घाट उतार दिए गए। किन्तु इस बूढ़े सेवक ने इस कठिन समय में भी अपने मस्तिष्क का संतुलन नहीं खोया। वह वहीं धरती में चुपचाप लेट गया और सब देखता रहा। भूपाक से रावणसिंह वहाँ आ पहुँचा। जल्लादों के सरदार का नाम था चामुण्डाराय। वह रावण का सेनापति था। रावण ने मोतियों की कीमती माला उसके गले में डाल दी और कहा—“शाबाश बहादुर ! तुने बड़ा काम किया। अब चढ़ी सवारी दौड़ जा, साँप मर गया मगर साँप के बच्चे अभी जिन्दा हैं। हम्मीर के दोनों राजकुमार पिंजोड़ में अजाजी के घर पर हैं। अभी मारते धोड़े जा और दोनों कुमारों को अपने बाप की सेवा करने के लिए यमलोक में भेज आ और समझ कि यह काम कर चुकने के साथ ही तेरे भाग्य का उदय हुआ। चामुण्डाराय ने यह सुनते ही अपने जल्लादों को हाँक लगाई। वे सब चढ़ी सवारी खून से भरी तलवारें हवा में हिलाते हुए पिंजोड़ गाँव की तरफ दौड़ चले।

छुच्छरबूटा ने सब सुना, सब देखा । उस अन्धकार में वे स्वार्थान्ध खूनी उसे नहीं देख पाए । वह कीड़े की भाँति रेंग कर द्रुत गति से एक ओर चल दिया तथा एकान्त होने पर उठकर उस स्थान की ओर दौड़ चला, जहाँ उसने अपनी साँडनी जंगल में छुपाई हुई थी । वह साँडनी अत्यन्त द्रुतगामिनी थी । वह एक घड़ी में चार गाँव का रास्ता पार करती थी । बूढ़ा साँडनी पर सवार हुआ और साँडनी हवा में तैरने लगी । उसे उन जल्लादों की नजर से भी अपने को बचाना था और पिंजोड़ भी उनसे पहले पहुँचना था । वह खेतों और नालों में से रास्ता काट कर हत्यारों से पहले सही सलामत पिंजोड़ जा पहुँचा । अब तक तीन पहर रात बीत चुकी थी । वह सूनी गाँव की गलियों को पार कर सीधा अजाजी के महल के द्वार पर जा पहुँचा । सूचना पाते ही अजाजी की रानी घबरा उठी । उसने तत्काल छुच्छर को बुलाकर कुशल

पूछा। छच्छर ने माथे का पसीना पोंछते हुए कहा—“रानी माँ कुशल कैसी, महाराज तो उस पापी रावण के हाथों मारे गए, अब कुमारों का घात करने कुछ ही पल में हत्यारे यहाँ पहुँच रहे हैं। आप अभी कुमारों को मेरे हवाले कीजिए। मेरी साँडनी दमदार है। आपसे रोका जाए तो हत्यारों को रोकना, तब तक मैं कुमारों को लेकर जितनी दूर संभव होगा, निकल जाऊँगा।” अजाजी भी जागकर आ गए। सब सुन उन्होंने रानी से कहा—“रानी समय कम है—और काम बहुत है, जाओ कुमारों को अभी ले आओ।” फिर छच्छर की ओर रुख करके बोले—“भाया तेरे ही हाथ कच्छ के धनी की रक्षा का भार है, पर तू अब बियरा न जाना! सीधे अहमदाबाद सुलतान के पास जैसे बने दोनों कुमारों को ले जा।” रानी दोनों कुमारों को ले आई। सुकुमार बालकों की आँखें नींद से भरी थीं। छच्छर ने कहा—“बापू जब तक दम में दम है, चूक न होगी।” उसने कमर से फेंट खोल राजकुमारों को अपनी पीठ पर कसा। साँडनी पर आसन जमाया और साँडनी को अहमदाबाद की राह पर छोड़ दिया।

अजाजी और उनकी रानी आँखों में आँसू भरे एक टक उस जाते हुए को देखते रहे। जब साँडनी आँखों से ओझल हो गई तब अजाजी ने सब सिपाहियों और पहरेदारों को ज्योड़ी से हटा दिया और बड़े सेवक हीरजी को ऊँच नीच समझा, पौर पर बैठा—आप महल में जा बैठे।

यह सब होते न होते जल्लाद भी घोड़ा दौड़ाते आ पहुँचे । सब मिल कर २५ नर घाती थे । सबके आगे नंगी तलवार हाथ में लिये चामुण्डाराय था । इन्हें देख हीरजी तलवार गोद में रख पैर फैला कर पौर में सो गया ।

चामुण्डाराय ने घोड़े से उतर कर हीरजी को ठोकर मार कर कहा—“उठ रे बूढ़े, अभी अजाजी को हमारी अवाई की खबर कर ।” परन्तु ठोकर खाकर भी हीरजी नहीं उठा । करवट फेर कर बड़बड़ाता हुआ फिर सो गया ।

चामुण्डाराय ने उसे पकड़ कर भंभोड़ डाला । गुस्से में भर कर कहा—“उठ हरामखोर, अभी अजाजी को खबर कर ।” अब बूढ़े हीरजी ने आखें खोलीं और देखकर कहा—“क्या तुम लोग डाकू हो ? ठहरो, मैं अभी सिपाहियों को हांक लगाता हूँ । उसने जोर से सिपाहियों को हांक लगाई । चामुण्डाराय ने अपना मुँह उसके निकट ले जाकर कहा—“अरे बूढ़े, पहचानता नहीं ? मैं जाम साहब का सेनापति चामुण्डाराय हूँ ।” बूढ़े हीरजी ने आखें फाड़कर चामुण्डाराय की ओर देखा, फिर हँस कर कहा—“पधारो, पधारो, माई-बाप—मैं तो डर गया कि धाड़ पड़ी । मजा में तो हो । बैठो—बैठो ।”

“तू अजाजी को हमारी अवाई की खबर कर, राज-काज के लिए उनसे अभी मिलना जरूरी है ।”

“तो आप विराजो तो सही अन्नदाता । घड़ी एक में मालिक जागते हैं, तब तक पानी करो, मैं अभी बन्दोबस्त करता हूँ ।”

“अमल पानी नहीं रे, महाराज का हुक्म है, तू अभी खबर कर ।”

बूढ़े हीरजी ने सिर पर पाग बांधते हुए कहा—“तो अभी इत्तला करता हूँ ।” वह पौर में चला गया । और चामुण्डाराय अधीर होकर पौर पर टहलता रहा ।

कुछ काल और बीता । तब अजाजी बाहर आए । चामुण्डाराय से भुजभर भेंट की और नम्रता से कहा—“इस असमय में सेनापति का पधारना किस मतलब से हुआ ?”

“मैं जाम साहब के हुक्म से आया हूँ ।”

“मैं जाम साहब का आज्ञाकारी दास हूँ । मेरे लिए महाराज का क्या हुक्म है ?”

“हमारे महाराज के यहाँ वियरा के जाम हम्मीर अतिथि रूप में उपस्थित हैं । उनके दोनों राजकुमार आपके यहाँ हैं, उन्हें महाराज ने बुलाया है, आप उन्हें अभी हमारे हवाले कीजिए ।”

“बड़े आनन्द की बात है । दोनों कुमार सो रहे हैं । आप रातों-रात चलकर आ रहे हैं । घोड़े भी थक गए हैं । कमर खोलिए । अमल पानी कीजिए, रुखा-सूखा जो कुछ है स्वीकार कीजिए, तब तक राजकुमार भी जग जायेंगे ।” अजाजी ने आधीनता दिखाते हुए कहा ।

चामुण्डाराय यह जान कर कि शिकार कब्जे में है कुछ आश्वस्त हुआ । पर उसने कहा—“ठहर नहीं सकता अजाजी । महाराजाधिराज का हुक्म है कि कुँवर साहबान को लेकर तुरन्त पीछे आओ । सो आप अभी दोनों कुँवरों को ले आइए ।”

“तो जैसी राजाज्ञा, मैं अभी राजकुमारों को भेजता हूँ ।” यह कह कर अजाजी महलों में चले गए ।

परन्तु बहुत समय बीत जाने पर भी राजकुमार नहीं आए। न कोई दास-दासी ही पौर पर आया। पूर्व में सफेदी फैली, सूर्योदय हुआ। चामुण्डाराय ने जोर से चिल्लाना और पुकारना आरम्भ किया।

हीरजी ने आकर हँसते हुए कहा—“अन्नदाता से हमारे स्वामी की भेंट हुई न ?”

“पर अजाजी कहाँ हैं ?”

“दातुन-कुल्ला कर रहे हैं, माई-बाप !”

“अरे, उन्हें अभी यहाँ बुला ला ।” चामुण्डाराय ने अधीर होकर क्रोधित स्वर में कहा।

“अभी लाया माई-बाप ।” कहकर हीरजी फिर पौर में घुस गया। थोड़ी देर में दाँतुन हाथ में लिए अजाजी बाहर आए। उन्होंने आश्चर्य की मुद्रा में कहा—“अरे, राजकुँवर अभी नहीं आए ? बड़ी खराब बात है। मैं तो राजकुमारों को जगा कर और उन्हें बाहर भेजने को कहकर कुल्ला-दांतुन में लग गया ।” फिर उन्होंने हीरजी की ओर मुख करके कहा—“जा, जा, रानी-महल में जाकर दोनों कुँवरों को ले आ ।” हीरजी भीतर चला गया और अजाजी वहीं बैठ कर चामुण्डाराय से गप्पें लड़ाने लगे। सरज उभर आया, धूप फैल गई। चामुण्डाराय ने कहा—“बड़ी देर हो रही है अजाजी !”

इसी समय हीरजी ने आकर कहा—“राजकुमार तो बहुत देर हुई रानी-महल से आ गए ?”

“अरे, तो वे हैं कहाँ ? तुम सब हरामखोर हो । रानीजी से पूछ कि राजकुमार कहाँ हैं, यहाँ तो अभी आए नहीं ।”

हीरजी फिर भीतर चला गया । और कुछ देर बाद आकर उसने कहा—“सरकार, रानीजी पूजा में हैं ।”

अब अजाजी गुस्से में बकते-भकते और यह कहते कि मैं देखता हूँ, फिर महल में घुस गए ।

आधा घंटा बीत गया । चामुण्डाराय का रूप अब उग्र होने लगा । वह जोर-जोर से बकने लगा । इसी समय अजाजी ने आकर कहा—“बड़ी विचित्र बात है । राजकुमार महलों में नहीं हैं । उनके साथ वह दासी भी गायब है, जो उन्हें ला रही थी । पर वे गए कहाँ ?”

चामुण्डाराय ने अब अपना असली रूप प्रकट किया । उसने ललकार कर कहा—“सिपाहियो, महल को घेर लो ।” और अजाजी से कहा—“अजाजी, मैं महल की तलाशी लूँगा । आप राज-विद्रोह कर रहे हैं । सीधी तरह राजकुमारों को मेरे हवाले कीजिए, नहीं तो अच्छा न होगा । और महाराज रावणसिंह महल को ढहा कर उस पर गधों से हल जुतवा देंगे !”

अजाजी ने कहा—“सेनापति, तुम सेनापति होने पर भी राज्य के चाकर हो और हम भायात हैं । ऐसी बात करके तुम हमारा अपमान कर रहे हो, इसका नतीजा पीछे देखना । अभी तुम अच्छी तरह महल की तलाशी लो और देखो की राजद्रोही कौन है ।”

महल की राई-रक्ती तलाशी ली गई । राजकुमारों को न मिलना था, न मिले ।

८

चामुण्डाराय भूखे बाघ की तरह बफरने लगा ।

उसने अजाजी से कहा—“राजकुमारों को आपने जान-बूझ कर भगा दिया है । निस्संदेह वे राजमहल में नहीं हैं । परन्तु कोई चिन्ता नहीं, मैं उन्हें सात-पाताल से खोज कर लाऊँगा ।” उसने सिपाहियों से कहा—“जाओ देखो इस गाँव में कोई पगी-खोजी है । यदि हो तो उसे पकड़ लाओ ।”

गाँव में कोई खोजी न था; पर वहाँ से दो गाँवों के अन्तर पर एक प्रसिद्ध खोजी रहता था । चामुण्डाराय ने उसे पकड़ मँगाया । खोजी आकर पैरों के चिन्ह देख—जाँच कर कहा—“अन्नदाता, चोर साँडनी पर सवार होकर भागा है ।”

इसी समय हीरजी ने आकर कहा—“राजकुमार तो बहुत देर हुई रानी-महल से आ गए ?”

“अरे, तो वे हैं कहाँ ? तुम सब हरामखोर हो । रानीजी से पूछ कि राजकुमार कहाँ हैं, यहाँ तो अभी आए नहीं ।”

हीरजी फिर भीतर चला गया । और कुछ देर बाद आकर उसने कहा—“सरकार, रानीजी पूजा में हैं ।”

अब अजाजी गुस्से में बकते-भकते और यह कहते कि मैं देखता हूँ, फिर महल में घुस गए ।

आधा घंटा बीत गया । चामुण्डाराय का रूप अब उग्र होने लगा । वह जोर-जोर से बकने लगा । इसी समय अजाजी ने आकर कहा—“बड़ी विचित्र बात है । राजकुमार महलों में नहीं हैं । उनके साथ वह दासी भी गायब है, जो उन्हें ला रही थी । पर वे गए कहाँ ?”

चामुण्डाराय ने अब अपना असली रूप प्रकट किया । उसने ललकार कर कहा—“सिपाहियो, महल को घेर लो ।” और अजाजी से कहा—“अजाजी, मैं महल की तलाशी लूँगा । आप राज-विद्रोह कर रहे हैं । सीधी तरह राजकुमारों को मेरे हवाले कीजिए, नहीं तो अच्छा न होगा । और महाराज रावणसिंह महल को ढहा कर उस पर गधों से हल ज़ुतवा देंगे !”

अजाजी ने कहा—“सेनापति, तुम सेनापति होने पर भी राज्य के चाकर हो और हम भायात हैं । ऐसी बात करके तुम हमारा अपमान कर रहे हो, इसका नतीजा पीछे देखना । अभी तुम अच्छी तरह महल की तलाशी लो और देखो की राजद्रोही कौन है ।”

महल की राई-रस्ती तलाशी ली गई । राजकुमारों को न मिलना था, न मिले ।

८

चामुण्डाराय भूखे बाघ की तरह बफरने लगा ।

उसने अजाजी से कहा—“राजकुमारों को आपने जान-बूझ कर भगा दिया है । निस्संदेह वे राजमहल में नहीं हैं । परन्तु कोई चिन्ता नहीं, मैं उन्हें सात-पाताल से खोज कर लाऊँगा ।” उसने सिपाहियों से कहा—“जाओ देखो इस गाँव में कोई पगी-खोजी है । यदि हो तो उसे पकड़ लाओ ।”

गाँव में कोई खोजी न था; पर वहाँ से दो गाँवों के अन्तर पर एक प्रसिद्ध खोजी रहता था । चामुण्डाराय ने उसे पकड़ मँगाया । खोजी आकर पैरों के चिन्ह देख—जाँच कर कहा—“अन्नदाता, चोर साँडनी पर सवार होकर भागा है ।”

इस खोज-जाँच में दो प्रहर-काल बीत गया। और जब खोजी को आगे करके चामुण्डाराय की खूनी टोली साँडनी के पग-चिन्ह देखती आगे बढ़ रही थी, तब सूर्य ढलने लगा था।

जब चामुण्डाराय की हत्यारी टोली पिंजोड़ गाँव की सीमा से चली गई तब अजाजी ने रानी से कहा—“यह विपत्ति तो टली, परन्तु बात गम्भीर है और कच्छ के धनी की रक्षा का प्रश्न है। यद्यपि छुछुरबूटा को भाग निकलने का यथेष्ट समय मिल गया है। तथापि हमें राजकुमारों की ओर से निश्चिन्त नहीं रहना चाहिए। यदि उनका कुल अशुभ हो गया तो हमारे कुल को भी दाग लग जाएगा। चामुण्डाराय खोजी को साथ ले कर गया है। आश्चर्य नहीं कि छुछुर को पकड़ ले। अकेला छुछुर क्या कर लेगा! चामुण्डाराय के साथ पच्चीस सिपाही हैं। वे और उनके घोड़े भी थके हुए हैं। इसलिए मैं अपने हथियारबन्द आदमियों को लेकर उनके पीछे जाता हूँ। व्यर्थ भगड़ा नहीं करूँगा। पर कदाचित् राजकुमार इन हत्यारों के हाथ पड़ ही गए तो मैं भी दो-दो हाथ या तो उनका उद्धार करूँगा या वहीं खेत रहूँगा।” इतना कह, रानी को समझा-बुझा, उसे बिलखती छोड़, पचास हथियार बन्द राजपूत संग ले अजाजी ने भी चामुण्डाराय का अनुसरण किया...

६

छुल्लरबूटा राजकुमारों को पीठ पर फेंट से कसे साँडनी पर भूपभूप अहमदाबाद की राह पर दौड़े जा रहा था। न उसे भूख-प्यास थी, न थकान। उसकी साँडनी भी जैसे पर लगा कर उड़ी जा रही थी। वह दिन भर भागा-भागा चला गया। सन्ध्या होते-होते वह सापर गाँव में जा पहुँचा। सापर मियानाओं का गाँव था। मियना लोग वास्तव में कच्छ के मुसलमान और प्रसिद्ध चोर डाकू थे। वे प्रकट में खेती-बाड़ी करते थे। और अवसर कुअवसर मार-धाड़ का काम भी करते थे। उनका संगठन ऐसा प्रबल था कि राजा भी उनसे डरते थे। गाँव के पटेल का नाम मियाँ था। गाँव के बाहर कच्ची दिवारों पर छप्पर डालकर उसने अपनी मढ़ैया बनाई थी। मढ़ैया में वह अपने परिवार और कुटुम्ब के साथ रहता था। मढ़ैया के सामने उसके हरे-भरे खेत थे। और मैदान में घास की सात विशाल गंजिया लगी थीं।

छच्छर ने मियाँ की मढ़ी के सामने आकर साँडनी रोकी। और मियाँ पटेल से सारी हकीकत कह सुनाई। तथा राजकुमारों की शरण माँगी। मियाँ पटेल का शरीर स्थूल, मूछें सफेद और बड़ी-बड़ी थीं। आयु उसकी साठ को पार कर गई थी। सब बात सुनकर मियाँ क्षण भर स्तब्ध खड़ा रह गया। और फिर उसने अपना कर्तव्य निर्णय किया। घास की एक गंजी में उसने जगह करके दोनों राजकुमारों को उसमें छिपा दिया। फिर वह एक घड़े में पानी और कुछ खाने का सामान लेकर छच्छरबूटा को निकट की पहाड़ी में ले गया। वहाँ एक गुप्त गुफा में छच्छर को छिपाकर जल और आहार उसके निकट रख, यह समझा दिया कि तुझे यहाँ कुछ भी भय नहीं है। तू यहाँ बैठ, समय पर और सूचना मैं तुझे दूँगा। किन्तु साँडनी के अठारह अंग बेडौल होते हैं। यह छुपाए छुपने वाली नहीं है। इसलिए उसे उसके भाग्य पर छोड़। इसके लिए जंगल में चारा बहुत है। बात की उपयुक्तता को समझ छच्छरबूटा ने साँडनी को तो पर्वत की घाटियों में चरने हाँक दिया और आप गुफा में छिपकर बैठ गया। छच्छर का सारा प्रबन्ध कर मियाँ अपनी मदैया पर आया। सब भाई-बन्दों को बुलाकर विचार-विमर्श कर, मन में निश्चय ठान आने वाली विपत्ति का सामना करने मुत्तैदी से आ बैठा।

रात-भर पग-चिह्न लेता हुआ चामुण्डाराय मोर होते-होते मियनाओं के सापर गाँव आ पहुँचा। खोजी ने कहा—“बस यहीं साँडनी रुकी है।” चामुण्डाराय ने मियाँ के भोंपड़े के सामने आकर चारपाई पर सोते मियाँ मियाना को देख ललकार कर कहा—“ओ उठ खड़ा हो, तेरी भोंपड़ी में हमारे दो चोर हैं। उन्हें अभी हमारे हवाले कर, नहीं तो जान रख तेरे प्राणों की खैर नहीं है।” मियाँ ने उठकर हाथ जोड़ कर कहा—“अबदाता, कैसा चोर, भला मैं राजा के चोर को अपने घर में छिपा कर मुफ्त में विपत्ति मोल लूँगा? ऐसा नादान मैं नहीं हूँ। गरीबपरवर मैं आपके चोर के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानता।”

अभी मियाँ मियाना से चामुण्डाराय की ये बातें हो ही रही थीं कि खोजी साँडनी के पग-चिन्ह देख पर्वत की घाटी में जा पहुँचा और एक स्थान पर चरती साँडनी को पकड़ लाया। चामुण्डाराय ने दरबारी वाहन साँडनी को पहचान कर कहा—“इसी साँडनी पर हमारा चोर आया है। जब साँडनी यहाँ है तब चोर भी यहीं है।” उसने सिपाहियों को पर्वत पर राई-रत्ती खोज करने की आज्ञा दी। पर राजकुमारों का पता नहीं लगा। वे थक-थका कर फिर मियाँ मियाना की मढ़ी पर आ धमके। सब बातें सुन कर मियाँ से कहा—“पटेल तेरे घर तक साँडनी आई है। यहाँ से उस झूगर की तलहटी में चरने तूने हाँक दी है। राजकुमार पर्वत पर नहीं हो तो अवश्य तेरे घर में या गाँव में है। तू उन्हें जानता है। बहानेबाजी छोड़ और राजकुमारों को हमारे हवाले कर, नहीं तो तेरा सारा परिवार बुरी तरह मारा जाएगा। चोर को हमारे सुपुर्द करने में राजा तुझे १० गाँव इनाम में देगा।

मियाँ ने कहा—“गरीबनवाज आप इस सारे गाँव में आग लगाकर यहाँ के सब निवासियों को मार डालें, तो भी हमारा क्या बस। पर मैं अपराधी नहीं, साँडनी हमारे गाँव में आई भी नहीं और मैंने राजकुमारों को देखा भी नहीं। आपको मेरा विश्वास नहीं तो आप भले ही मेरे परिवार का वध कर डालिए। आप हमारे मालिक हैं।”

परन्तु चामुण्डाराय इन बातों में भूलने वाला नहीं था। उसका पक्का विश्वास हो गया था कि राजकुमार यहीं हैं। उसने कहा—“ठीक है। पर राजकुमार यहीं हैं। तेरे घर में नहीं हैं तो गाँव में कहीं तूने छिपाया है। इसलिए सारे गाँव को जला कर राख करना होगा।” इतना कह कर उसने सिपाहियों को आज्ञा दी कि गाँव को चारों ओर से घेर कर उसमें आग लगा दो। बूढ़ा बच्चा जो भी भागने की चेष्टा करे, उसे वहीं काट डालो जिससे यह बूढ़ा पटेल देख ले कि राजद्रोह की सजा क्या है।”

देखते ही देखते गाँव आग से सुलग उठा। आग की प्रचण्ड लपटों ने आकाश को लाल कर दिया। जंगले-सुलगने लगे स्त्री, बालक, वृद्ध और बेचारे जानवरों की आर्त पुकार से प्रलय का दृश्य उपस्थित हो गया। गाँव के सारे स्त्री, पुरुष, पशु आर्तनाद करते-करते जल मरे।

परन्तु मियाँ के मुखमण्डल पर किसी प्रकार का शोक, उद्वेग या मलिनता न थी। उसके नेत्रों में एक दिव्य चमक आ रही थी। वह अचल पर्वत की भाँति खड़ा था। देखते ही देखते उसके सगे-सम्बन्धी जल कर खाक हो गए।

पटेल की यह दृढ़ मुद्रा देखकर चामुण्डाराय भी विचलित हो गया । उसने सोचा गाँव में राजकुमार नहीं थे, परन्तु अब उन्हें कहाँ ढूँढ़ा जाए । इसी समय चामुण्डाराय ने धूल का बादल उड़ता देखा । और कुछ ही क्षण में एक घुड़सवार सेना साथ लिए स्वयं जाम रावणसिंह वहाँ आ उपस्थित हुआ । सेना के सिपाहियों ने चारों ओर से पटेल की मदैया को घेर लिया । घोड़ों ने खेत रौंद डाले, सिपाहियों ने पशु खोल दिए, चीजें नष्ट-भ्रष्ट कर दीं । परन्तु मियाँ पटेल उसी भाँति अटल-अचल खड़ा रहा । वैसी ही उसकी मुख मुद्रा, वैसी ही आँखों की चमक । भय-शंका से पाक-साफ ।

चामुण्डाराय ने सब हकीकत रावण को समझा दी । सब बात सुन-समझ रावण की दृढ़ दृष्टि उन घास की गंजियों पर पड़ी । उसने आज्ञा दी—“जैसे यह राज-विद्रोही गाँव आग की भेंट हुआ है उसी प्रकार

एक-एक करके घास की इन गन्जियों में भी आग लगा दो और इस कूँ और बावली को पत्थरों से पाट दो ।”

सैनिक राजाज्ञा पालन करने आगे बढ़े । परन्तु इसी क्षण पटेल ने ललकार कर कहा—“ठहरो ।” और वह आगे बढ़कर जाम रावण के सम्मुख आया और राजा को प्रणाम कर कहा—“महाराजाधिराज, राजाज्ञा हुई सो ठीक, पर राजाज्ञा पालन करने से प्रथम मेरी प्रार्थना सुन ली जाय । आपश्री हाल ही में कच्छ के स्वामी बने हैं, अतः आपको आरम्भ में ही रैयत की हाय लेना शुभ नहीं होगा । आगे जैसी महाराज की मरजी । आपके अधिकारी ने बिना अपराध हमारा गाँव जलाकर खाक कर डाला । बूढ़ों और बच्चों पर भी दया नहीं की । अब यहाँ मेरा इतना सा परिवार बच रहा है । सो आप कुआँ बावली पत्थर से पाट कर हमारा पीने का पानी नष्ट करना चाहते हैं । हमारी घास की गंजी में आग लगा कर हमारे पशुओं को भूखा मारना चाहते हैं । सो आप खुशी से कीजिए । परन्तु इससे पहले इस दास का सिर काट लीजिए और मेरे सब बाल-बच्चों को भी तलवार के घाट उतार दीजिए, जिससे हमें भूखों न मरना पड़े । परन्तु इससे पहले आप सब मियानाओं को कच्छ से बाहर निकलवा दीजिए । इसी में आपका भला है । क्योंकि आज का यह जुल्म दुनियाँ की आँखों से छिपा न रहेगा । और जब मेरे भाईजात यह सुनेंगे तब वे बलवा करेंगे, और आप यह जानते हैं कि उस बलवे को दबाने की ताकत आपकी सेना में नहीं है । यह विचार लीजिए । यही मेरी आपसे प्रार्थना है ।”

पटेल की अभय मुद्रा और शान्त वाणी सुनकर रावणसिंह विचार में पड़ गया। उसने कहा—“बुढ़े, तेरी कोई संतान है ?”

बूढ़े पटेल ने कहा—“अन्नदाता, मेरे आठ पुत्र हैं।”

“तो उन सबको यहाँ बुला !” रावण ने आज्ञा दी। पटेल के आठों पुत्र हाथ बाँधे राजा के सामने आ खड़े हुए। राजा ने खटाक से म्यान से तलवार निकाल कर पटेल के सबसे बड़े पुत्र की गरदन पर भरपूर वार किया। लड़के का सिर धड़ से जुदा होकर धूल में लोटने लगा। पुत्र का इस प्रकार अकल्पित रूप से घात होते देख पटेल की आँखों के आँसू सूख गए और उसकी आँखों में वही चमक आ गई। वह पर्वत की भाँति अचल खड़ा रहा।

राजा ने उसे लक्ष्य करके कहा—“यह है राजद्रोह का दण्ड। अभी समय है, तूने अवश्य घास की इन गंजियों में राजकुमारों को

छिपा रखा है। भलाई इसी में है कि उन्हें निकालकर मुझे सौंप दे। और अपने परिवार को विनाश से बचा ले।”

पटेल ने धीरे गम्भीर स्वर में कहा—“महाराज, यदि मेरे परिवार के भाग्य में इसी रीति नष्ट होना बदा है तो मैं आपको दोष नहीं दूँगा। राजपुत्र मेरे पास नहीं हैं।”

क्रोध में उबल कर रावणसिंह ने मियाँ के दूसरे पुत्र का सिर धड़ से उड़ा दिया। पटेल की पुत्रवधुएँ हाहाकार कर उठीं और खूनी हत्यारे सिपाही भी भय से थर्रा उठे। पर राज्य-लोभान्ध रावणसिंह का कठोर हृदय न पसीजा। उसने पटेल को लक्ष्य कर कहा—“अब भी राजकुमारों को देगा कि नहीं?”

पटेल ने आँखों से आग बरसाते हुए करारा जवाब दिया—“अरे राजा, जो तू मुझे अपना अपराधी मानता है तो मुझे मार डाल। निरपराध बालकों की हत्या से क्यों अपने कुल को कलंकित करता है।”

पटेल की बात पूरी भी न हुई थी कि जाम रावण ने पटेल के तीसरे पुत्र की छाती में भाले की अण्णी भोंक उसे भाले पर अधर में उठा लिया। बालक की छाती में से खून की धारा बह चली और वह अधर में तड़पने लगा। रावण ने लाश धरती पर पटक दी और बालक के गर्म लहू की अंजली भर पटेल के मुख पर दे मारी। पटेल की धौली मूँछें लाल हो गईं। मियाँ की आँखों में अन्धेरा छा गया और उसका शरीर पीपल के पत्ते की भाँति काँपने लगा। यह देख पटेल की स्त्री घबराई। उसे शंका हुई कि कहीं दुःख से घबरा कर पटेल राजकुमारों का भेद न बता दें, जिससे हमारी सारी कमाई धूल में मिल जाए और दुनिया में हमारा मुँह काला हो। वह झोपड़ी से निकल कर पटेल के पास आई। उसने उसके कान के पास मुँह लगाकर धीरे से कहा—“हिम्मत न हारना हमारा बन्म तो कुत्ते का-सा है। मैं ज़िन्दा रही।

तो और पुत्र जन्मूँगी । पर तुम इस समय मोह में पड़कर राजवंश का नाश न करा बैठना । छाती को मजबूत रखना ।”

पत्नी के वचन सुन पटेल ने आँसू पोंछ डाले । वह तन कर राजा के सामने खड़ा हो गया । राजा ने एक-एक करके उसके चार और पुत्रों को भी तलवार के घाट उतार दिया । पटेल और उसकी स्त्री उसी माँति अटल अचल खड़े रहे । उनकी मुख मुद्रा से अथवा किसी अंग चेष्टा से दुःख का कोई चिन्ह नहीं प्रकट हो रहा था ।

सारी धरती लहू से लाल हो गई थी । सात लाशें खण्ड खण्ड भूमि पर पड़ीं थीं, जिनसे रह रह कर गर्म रक्त रिस रहा था । पटेल और उसकी पत्नी अचल भाव से पर्वत की भाँति सामने खड़े थे । यह सब हृदय-विदारक दृश्य देख रावण के भायात जो उस समय रावणसिंह के साथ था, का हृदय द्रवित हो उठा । उसने कहा—“महाराज, जिसकी आँखों के आगे सात पुत्रों को बकरों के समान हलाल कर दिया गया, तो भी कुमारों के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं दी । अब आप उससे और क्या आशा रखते हैं । मेरी तो विनती है कि अब इस पटेल, इसकी स्त्री तथा इसके एक पुत्र को प्राणदान दीजिए । यदि इस समाचार को जान कर ये सब मियाना लोग बिगड़ बैठे तो आपको और चामुण्डाराय को इस राज्य में रहना दूभर हो जाएगा ।”

पर रावण ने इस ठाकुर की बात सुनी अनसुनी करके पटेल को लक्ष्य करके कहा—“जो तुझे अब भी जीवित रहने की इच्छा हो तो कुमारों का पता बता दे, मैं तुझे भारी जागीरदार बना दूँगा ।”

परन्तु पटेल ने स्थिर शान्त कण्ठ से कहा—“मैं कुछ नहीं कह सकता और जीवन का मुझे कुछ भी मोह नहीं है ।”

पटेल का यह उत्तर सुन कर जाम रावण ने सिंह के समान गर्जना की । और शिवजी की ओर मुख करके कहा—“शिवजी भाई, तुम हमारे अत्यन्त विश्वासपात्र शुभचिन्तक हो । मैं तुम्हीं को इन गंजियों में से राजकुमारों को ढूढ़ निकालने का काम सौंपता हूँ । सहायता के लिए आदमी ले लो और यत्न से तलाश करो । तुम यदि राजकुमारों को खोज निकालने में सफल हुए तो तुम्हारा मान-वैभव राज्य में अब से चौगुना हो जायगा ।”

“जैसी महाराज की आज्ञा ।” शिवजी ने नम्रता से कहा ।

शिवजी लुहाणा एक वीर राजपूत था और उसके मन में रावणसिंह के इस क्रूर कर्म से उसके प्रति तिरस्कार का भाव उग आया था। उसने कुछ सिपाहियों को आज्ञा दी कि वे घास की गंजियों को चूँथ-चूँथ कर राजकुमारों की खोज करें। परन्तु एक बूढ़े सिपाही ने कहा—“महाराज इस प्रकार तो खोज-जाँच में कई दिन लग जाएँगे। गंजियों को चारों ओर से भालों से छेदा जाए, यदि गंजी में राजकुमार छिपे होंगे तो भाले की अरणी उनके अंगों में छिद जाएगी। और लहू से भरी अरणी बाहर निकलेगी तो उन्हें निकाल कर कैद कर लिया जाएगा।”

शिवजी ने कहा—“तो ऐसा ही करो।” यद्यपि उसने सिपाही के इस प्रस्ताव का अनुमोदन कर दिया था, परन्तु उसका धर्मभीरु मन यह चाह रहा था कि राजकुमारों का पता न चले तो ही अच्छा है। उसके मन में यह भावना भी दृढ़ हो रही थी कि कदाचित् राजकुमार मिल

भी गए तो उन्हें बचाने के लिए आवश्यकता होगी तो वह रावण का सामना करेगा ।

ज्योंही सिपाहियों ने गंजी में भाले भोंकने आरम्भ किए, मियाँ मियाना की आँखों का तेज बुझ गया । और उसकी आँखों से गंगा जमुना की धार बह चली । उसकी स्त्री भी आँचल में मुँह ढाँप कर रोने लगी । पर अब तो कोई उपाय ही न था ।

सब मिलाकर सत्रह गंजियाँ थीं । सिपाही उनमें चारो ओर से भाले छेद-छेदकर देखने लगे । सोलह गंजियाँ देख ली गईं तब वे बीच की गंजी के निकट आए । इस समय शिवजी भी सिपाहियों के साथ थे । सिपाही अब थक गए थे और उनके हाथ अब ढीले पड़ रहे थे । मियाँ मियाना मुँह फाड़ कर शिवजी की ओर ताकने लगा । शिवजी को सत्य बात समझने में देर न लगी । उन्होंने आगे बढ़कर सिपाहियों से कहा—“तुम सब हट जाओ और एक भाला हमें दो ।” एक सिपाही ने भाला उन्हें थमा दिया और सलाम करके पीछे हट गया । शिवजी ने भाला गंजी में भोंका । उसकी अणी युवराज खगार की जाँघ में घुसी और वह लहू में भरी निकली । शिवजी को अब निश्चय हो गया कि कुमार यहीं हैं । उसने तुरन्त निराशा का भाव प्रगट करते हुए भाले की अणी धरती में भोंक दी । लहू लगी अणी मिट्टी में धँस गई । शिवजी ने मियाँ पटेल से आँखें मिलाईं, आँखों ही आँखों में कुछ संकेत किया और रावण के सम्मुख जाकर कहा—“महाराज, इन गंजियों में राज-कुमार नहीं हैं ।”

यह सुन जाम रावण अत्यन्त निराश और लुब्ध हुआ । उसने कूँ और बावली में भी तलाश कराई । परन्तु कुमार नहीं मिले । कुछ लज्जा और पश्चात्ताप से उसने मियाँ पटेल को लक्ष्य करके कहा—“राजाज्ञा के कारण तुम्हें आज भारी संकट भेलना पड़ा । पर जो होना

था वह हो गया। आज से सीमा सहित यह गाँव तुम्हें बख्शीश देता हूँ। और गाँव में आग लगाई, लोगों की जान-माल की हानि हुई उसका हरजाना राज्य से मिलेगा। हमारी आज्ञा है, तुम लोग फिर से घर गाँव बसा कर खुशी से रहो।”

मियाँ पटेल ने कहा—“महाराज आपकी राज्य प्राप्ति के शुभ क्षण में मुझ सेवक को ऐसी बख्शीश मिल गई है जिसे पीढ़ियों तक मेरे वंश में कोई न भूल सकेगा। अब कृपा करके पटेल की यह पाग लीजिए और किसी दूसरे भाग्यवान के मस्तक पर सुशोभित कीजिए, जिससे इस दीन दास को और इसके वंश में किसी को भविष्य में ऐसी बख्शीश मिलने की संभावना न रहे।”

पटेल के इस भाषण से अप्रसन्न होकर रावण ने वह पाग पटेल से लेकर एक दूसरे मियाना के सिर पर रख दी और फिर बिना एक शब्द कहे अपने लश्कर सहित वहाँ से चला गया !

जाम को दल-बल सहित वहाँ से जाता देख मियाँ मियाना ने खुदा का शुक्रिया अदा किया। उसकी स्त्री ने कहा—“हमारे बच्चों का बलिदान सफल तो हुआ। बड़ी बात हुई।” फिर सभी बचे हुए मियाने एकत्र हुए और सलाह करने लगे। इस जुल्म का बदला कैसे लिया जाय। तब वृद्ध मियाँ ने कहा—“भाइयों, राजा से बैर का बदला राजा ही ले सकता है। हम तो रैयत हैं। बड़ी बात हुई कि हमारी आन रह गई। अब जैसे बने कुमारों को सही सलामत यहाँ से रवाना करो।”

संध्या का अन्धकार बढ़ने पर मियाँ ने राजकुमारों को बाहर निकाला। दोनों राजकुमार अभी अल्पवयस्क ही थे, पर वे बहुत कुछ अपनी विपत्ति और जीवनदाता के त्याग को समझ गए। उन्होंने पटेल को अपना धर्म-पिता कहकर प्रणाम किया। पटेल और उसकी पत्नी ने दोनों राजकुमारों को छाती से लगाकर बहुत-बहुत आँसू बहाए।

छ्छरबूटा को टेकरी की गुफा से बुलाया गया । मियाँ मियाना पर जो बीती थी उसे सुनकर उसने सिर धुन लिया । पर पटेल ने आँसू पोंछ कर कहा—“सरदार, यह तो संसार का चक्र है । जो होना था हुआ । चलो अब राजकुमारों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दें ।”

सवारी का कोई प्रबन्ध नहीं हो सकता था । परन्तु विलम्ब करना भी घातक था । छ्छरबूटा ने युवराज खंगारजी को कन्धे पर उठा लिया और पटेल ने दूसरे राजकुमार को । दोनों धीर-वीर वृद्ध लाठी टेकते अन्धकार में खो गए ।

१५

छच्छर और मियाना दोनों राजपुत्रों को कन्धों पर लिए ताबड़ तोड़ चल दिए। छच्छर दो दिन का भूखा था—और मियाना पर तो कहर ही बीता था। तिस पर दोनों बूढ़े आदमी—उनकी शारीरिक शक्ति जवाब दे रही थी, पर समय ही ऐसा था—और उद्देश्य का महत्त्व भी बहुत था। जान पर खेल कर दोनों आगे बढ़ते चले गए। रात अन्धेरी थी और जंगल ऊबड़-खाबड़ था, वे चाहते थे कि जितना दूर निकला जा सके निकल जाँय। वे चलते चले गए। रात भर वे चलते गए ! पाँच छै गाँवों का अंतर उन्होंने पार किया। अब पौ फट रही थी—पूर्व आकाश में सफेदी छाने लगी। एक गाँव आया। मियाँ ने कहा—“यह हमारे भायातों का गाँव है। और यहाँ से हमें सहायता भी मिल सकती है। वह अपने एक सम्बन्धी के द्वार पर गया। उसे सोते से जगाया और सारी विपता सुनाई।

मियाँ का सम्बन्धी भी नामी गिरामी चोर और अपने गाँव का पटेल था। सब बातें सुनकर वह जार-जार रोने लगा। उसने अपनी छाती और माथा पीट लिया। और कहा—मियाँ तू ठहर, मैं अभी मियानाओं के ६४ गावों में दुहाई फेरता हूँ। इस पापी हत्यारे राजा को हम देख लेंगे। इसके राज का ईंट से ईंट बजा देंगे। हम अपना खून बहा देंगे। अब या तो इस भूमि पर मियाना ही रहेंगे या यह राजा। इसके वंश में हम एक बच्चे को भी जीता नहीं छोड़ेंगे। हाय रे गजब ! हमारे साथ यह सितम ???

मियाँ ने अपने सम्बन्धी को छाती से लगाया, और आँसुओं से अपनी सफेद मूँछों को तर कर दिया। उसने कहा—“पटेल, हम परजा हैं। राजा पर गुस्सा करने से क्या होगा। राजा से तो राजा ही बैर ले सकता है। राजपुत्रों की प्राण रक्षा हो गई, बड़ी बात हुई। अब तो बस, मालिक से यही दुआ करो कि ये सही सलामत ठिकाने पहुँच जायँ और वे उम्र पाकर अपने पराक्रम से हमारा और अपना बैर ब्याज सहित इस जालिम राजा से चुकावे। हमें तो यही उचित है कि खून के आँस पीकर अपना छप्पर खड़ा करें और खेती-बारी से दिन काटकर उस दिन की प्रतीक्षा करें जिस दिन हमारे ये राजा अपना बैर का बदला लेने आएँ। तब हम भी इनके साथ दो-दो हाथ दिखाकर अपने हौसले पूरे करेंगे।”

बूढ़े मियाँ मियाना की बात सुनकर पटेल ने कहा—“तुम्हारी बात सच है। हमारे राजकुमार चिरंजीव हों। कहो अब क्या करना होगा।”

छल्लरबूटा ने कहा—“पटेल, अब तुम्हें और कुछ नहीं करना। बात फूटना खतरे से खाली नहीं। मियाँ अपने गाँव लौट जायँ। धीरज और सब्र से आने वाले दिन की प्रतीक्षा करें। तुमने बड़ा साहस किया, बड़ा काम किया, जब तक सूरज चाँद है तुम्हारा काम दुनियाँ में रोशन रहेगा। तुम्हारी इस वीरता का न बदला चुकाया जा सकता है

न बखान ही हो सकता है। दुनियाँ में भला किसने अपने राजा के लिए ऐसा बलिदान किया होगा।” यह कहकर छुल्लर मियाँ से लिपट गया।

राजकुमारों की यद्यपि अभी आयु कम ही थी पर बहुत समझदार थे। अब सारी घटना उन पर प्रकट हो गई थी। पटेल मियाना के पुत्रों का वध और सारे गाँव को जला कर खाक कर देने की बात सुनकर दोनों राजकुमार भी फूट-फूट कर रोने लगे। अन्त में बड़े राजकुमार ने कहा—“हे पूज्य जीवनदाता ! तुम चिन्ता न करना। आज आपने जो कुछ गँवाया है, उसे यह मत समझना कि आपने अपना सर्वस्व ही खो दिया। बैर लेने की दृढ़ इच्छा मनमें संजोना, हिम्मत रखना, समय आने पर मैं बैर का बदला लूँगा। हमारे पिता का आज स्वर्गवास हो गया। हमारी माता भी अब सती हो जायँगी। सो आज से आप हमारे राजकुल के धर्म पिता और आपकी पत्नी हमारी माता हुईं। अब से जब तक हमारे वंश में राज्य रहेगा, आप ही के वंशज सर्व प्रथम राजतिलक अपने हाथ से करेंगे। आपके पुत्रों का विनाश हुआ, अब से आप हमें अपना ही पुत्र समझिए। मैं जब तक जीवित हूँ तब तक आपको चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। बस, ईश्वर से कामना करना कि मैं शत्रु से बदला लेने में समर्थ होऊँ।”

मियाँ ने राजपुत्र को अंक में भर लिया। उसने जार-जार रोते हुए कहा—“तुम जिन्हो राजा। हम चोर डाकुओं का कुत्ते जैसा जीवन ही क्या ? जैसे कुत्ता एक रोटि का टुकड़ा ले भागता है—वैसे ही हमारा कृत्य है। आज हमारे पुत्रों ने अपने रक्त से हमारे सारे मियानाओं के कुकृत्यों को धो दिया। मैं बहुत खुश हूँ राजा, तुम जीते रहो। और बेफिक्र रहो। जब तुम नंगी तलवार हाथों में लेकर लौटोगे तो बीस हजार मियानाओं को तीर कमान से लैस अपनी रकाब के साथ लैस पाओगे। हमारे रक्त की एक एक बूँद तुम्हारे पसीने की बूँद पर न्योछावर है राजा। परन्तु दबीर, मेरी एक अर्ज है।” मियाना ने हाथ बाँधकर राजकुमार से कहा।

खंगार जी ने कहा—“कहो पिता, आज्ञा करो ।”

“तुम्हारे प्राणों की रक्षा मैंने नहीं की । शिवजी ठाकुर ने की है । उन्हें मत भूलना ।”

“मैं समझ गया धर्म पिता ! उनका साहस धन्य है । मैं कैसे भूल सकता हूँ ।”

“तो राजपुत्र, अब विलम्ब नहीं करना चाहिए । दिन निकल रहा है । मंजिल दूर है । अभी तक तुम दुश्मन के राज में हो । एक-एक पल कीमती है ।”

छुछुर ने कहा—“ठीक कहते हो मिया पटेल । मैं चला । अब तुम अपने घर लौट जाओ और तुम भाया पटेल किसी से इस बात की चर्चा मत करना ।”

“इधर से बेफिक्र रहें छुछुर भाई । हम चोर लोग बात को गहरी गाँठ लगाते हैं ।” उसने एक मोहर खंगार कुमार के सामने हथेली पर रख कर पेश की और कहा—“यह सेवक की स्वामी को भेंट है ।” फिर छुछुर की ओर मुड़ कर कहा—“दो गाँव और पार करके रण की सीमा आ लगेगी । तुम्हें रण का रेगिस्तान पार करते एक पहर समय लगेगा । और तीसरे पहर तक तुम भालावाड़ के दधिखर गाँव में पहुँच जाओगे । गाँव के बाहर ही एक विशाल वट का वृक्ष, तालाब और देव स्थान है । वहीं तुम रात को विश्राम करना । जाओ भाया, देवता तुम्हारी रक्षा करें ।” इतना कहकर मियाना ने एक बार दोनों राजपुत्रों को फिर छाती से लगाया और छुछुर को अंक में भर कर रवाना किया । तीनों व्यक्ति आगे बढ़े और दोनों पटेल आँस भरी आँखों से उन्हें देखते रहे ।

कभी एक कुमार को और कभी दूसरे को कन्धे पर बैठाता, छुछुर तेजी से आगे बढ़ा। भूख-प्यास और थकान से उसका वृद्ध शरीर चकनाचूर हो रहा था। पर इस समय जीवन-मरण की समस्या थी। जैसे उसके शरीर में लोहे के पर निकल आए हों—वह आगे बढ़ता ही जा रहा था।

बड़े राजकुमार का नाम खंगारजी था और छोटे का सायबजी। दोनों राजकुमार अभी अल्पवयस्क थे। खंगारजी की आयु १२ बरस और सायबजी की सात बरस की थी—परन्तु अपनी विपत्ति वे समझ गए थे। और वे भी भूख-प्यास, थकान की परवाह न कर कभी-कभी पैदल छुछुर के साथ उसके आगे-पीछे दौड़ लगाते जाते थे। दिन निकला, धूप चढ़ी—मध्याह्न हुआ—पर ये तीनों विपत्ता के मारे यात्री आगे चलते ही चले गए। अब वे भालावाड़ राज्य की सीमा में चल रहे थे। फिर भी भय की नंगी तलवार तो उनकी गर्दन पर अभी भी खड़ी थी।

तीसरा पहर होते-होते वे दधिखर नामक ग्राम की सीमा में पहुँच गए। गाँव की सीमा पर तालाब के किनारे वटवृक्ष की छाया में उन्होंने उतारा किया।

तालाब से जल भरने के लिए, स्नान-मञ्जन करने के लिए बहुत-सी ग्राम-वधूटियाँ आने लगीं। नाना प्रकार के वस्त्र धारण किए, कोई पीतल, कोई ताम्बा और कोई चाँदी तथा कोई मिट्टी के घड़े, कलश लिए जल भरने आ रही थीं, जा रही थीं। राजकुमार चुपचाप बैठे उनका यह आना-जाना, विनोद करना देख रहे थे। उन्होंने देखा—एक स्त्री दूर खड़ी बगल में पीतल का जल भरा कलश लिए राजकुमारों की ओर एकटक देख रही है। उसकी सब संगिनी चली गईं हैं—पर वह खड़ी एकटक दोनों राजकुमारों को देख रही है। राजकुमार खंगार ने कहा—“छ्छुर काका, यह स्त्री बड़ी देर से खड़ी चुपचाप हमारी ओर देख रही है। इसकी सब संगिनी चली गईं परन्तु यह नहीं गई। इस बात का पता लगाना चाहिए कि यह कौन है और क्या चाहती है। कोई दुश्मन की जासूस तो नहीं है।”

छ्छुर ने कहा—“हाजर, अन्नदाता।” वह उस स्त्री के पास पहुँचा और उससे पूछा—“बहिन तू यहाँ क्यों खड़ी है और क्या देख रही है।”

स्त्री ने कहा—“भाई, मैं क्या कहूँ। मेरी अकल काम नहीं करती। इन दोनों बालकों को देखकर मेरी बुद्धि ठगी-सी रह गई है। मैं तुमसे मन की बात क्या कहूँ।”

“नहीं, नहीं, जो बात तुम्हारे मन में हो वही कहो।”

“मैं कच्छ के लाखियार वियराना के एक बड़ई की बेटी हूँ। इस गाँव में मेरी समुल है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है—जैसे ये दोनों बालक हमारे राजकुमार खंगारजी और सायबजी ही हों। मैं कच्छ के धनी

महाराज जाम हम्मीर के कुमारों को अच्छी तरह पहचानतो हूँ। इन बालकों को राजसी वस्त्र पहना दिए जाँय तो ये हूबहू राजकुमार बन जायँ।”

छुछुर ने कहा—“बहिन अनेक मनुष्यों की आकृति एक-सी होती है। पर तुम्हें अपने राजकुमारों के प्रति इतनी व्यग्रता दर्शाने का कारण क्या है?”

“माई, हम न्त्रियाँ हैं, पीहर के लोगों में हमारी ममता स्वाभाविक है। पीहर के किसी भी आदमी को देखकर हमारे मन में जन्मभूमि और बचपन की याद आ जाती है। राजकुमारों को तो मैंने भलीभाँति देखा है, और इन बालकों की हूबहू वही आकृति देखकर मैं ठगी-सी रह गई हूँ। तुम बताओ ये कौन हैं।”

छुछुर ने कहा—“बहिन तेरा अनुमान सच है। कुछ ऐसी राजसी अनहोनी भयंकर घटनाएँ हो गई हैं जिसके कारण राजकुमार इस दीन-हीन दशा में छद्मवेश में यात्रा कर रहे हैं।”

“तो ये सचमुच हमारे राजकुमार खंगारजी और सायबजी हैं” बहिन, विश्वासघाती जाम रावण ने कच्छ के महाराज जाम हम्मीर का वध कर दिया। और अब वह इनके प्राणों का गाहक बन गया है। इसी से हम गुजरात जा रहे हैं।”

“तब तो ये राजकुमार नहीं—हमारे महाराज हैं। मात्ता भगवान् के स्वरूप हैं।” वह दौड़कर राजकुमारों के पास आई, उनकी न्योछावर की और प्रेमपूर्ण वाणी से नम्रतापूर्वक कहा—“हे मेरे महाराज, आपको इस दीनावस्था में देख मेरी छाती फटती है। पर मेरी जैसी असहाय अबला स्त्री केवल अन्तःकरण से आशीर्वाद देने के सिवा और क्या सहायता कर सकती है।”

खंगारजी ने कहा—“बहिन, तुम्हारा यह प्रेमाग्रह और आशीर्वाद ही हमारे लिए दुर्लभ है। ऐसा आशीर्वाद भाग्य से ही मिलता है।”

“मेरे महाराज, आपके मुख से निकले ये शब्द आपकी महानता के द्योतक हैं। पर इस गाँव में मेरे रहते आप इस प्रकार गाँव के बाहर वृक्ष के नीचे पड़े रहें, यह नहीं हो सकता। कृपा कर गाँव में पधारिए। मेरी भोपड़ी को पवित्र कीजिए। रूखी-सूखी जो हमसे बन पड़े स्वीकार कीजिए। भला हम गरीबों का यह भाग्य कहाँ कि आपके चरण हमारी भोपड़ी में पड़ें।”

खंगारजी ने कहा—“बहिन, तुम्हारा ऐसा आग्रह है तो उसे स्वीकार न करना अशिष्टता होगी।”

“तो आप घड़ी भर यहीं विराजिए। मैं अपने श्वसुर को आपकी सेवा में भेजती हूँ। वह आपको साथ लिवा ले जाएँगे।”

इतना कहकर वह स्त्री चली गई। उसने अपने श्वसुर से सब वृत्तान्त कहा। वह अपने ४-५ इष्ट-मित्रों सहित वहाँ आकर आदर-भाव से राजकुमारों को अपने घर ले आया। और स्वच्छ आसन देकर बैठने की विनती की।

घर में जाकर राजकुमार ने छल्लर से सलाह ली—कि सद्गृहस्थ गरीब आदमी है—इसपर आतिथ्य का अधिक भार डालना ठीक नहीं है।

कुछ देर बैठने के बाद राजकुमार ने वृद्ध गृहपति से कहा—“सद्गृहस्थ, आपने और हमारी बहिन ने जो हमारा सत्कार किया, और ऐसा प्रेम प्रकट किया, उससे हमें जो सन्तोष हुआ उसे हम कहकर प्रकट नहीं कर सकते। हमें खेद यही है कि इस समय हम अपनी बहिन को कुछ वस्त्राभरण भी नहीं भेंट कर सकते। यदि ईश्वर ने कृपा की और हमें शुभ दिवस का दर्शन हुआ तो हम आप के इस

उपकार और कृपा को भूलेंगे नहीं। किन्तु अब आप हमें जाने की आज्ञा दीजिए। क्योंकि हमें शीघ्रातिशीघ्र अहमदाबाद पहुँचना है। साथ में सवारी भी नहीं है। मार्ग में इसी प्रकार विलम्ब होता जायगा तो वहाँ पहुँचते-पहुँचते छै मास या एक वर्ष लग जायगा। आपका प्रेम देखकर हमें यहाँ आना आवश्यक था। अब आप हमें जाने की आज्ञा दीजिए।”

वृद्ध पुरुष ने कहा—“महाराज, इस प्रकार जाने की अनुमति भला कैसे दी जा सकती है। अधिक नहीं तो दो-चार दिन आप अवश्य ही इस दास की भोपड़ी में विराजिए।”

“नहीं, आज की रात भी हम यहाँ नहीं ठहर सकते। हमें जाने की बहुत ही जल्दी है। आप भी परिस्थिति का महत्व समझ कर आग्रह मत कीजिए।”

वृद्ध ने कहा—“आप हमारे स्वामी हैं, हम आपके सेवक और आधीन जन हैं, जब आपकी ऐसी ही मर्जी है तो भोजन तैयार हो रहा है। भोजन करके आप पधारिए।”

“नहीं, भोजन के लिए भी विलम्ब करना ठीक नहीं है, परन्तु आपके आतिथ्य का अनादर न हो—इसलिए इस समय घर में जो भी खाने-पीने योग्य वस्तु हो वही ले आइए।”

वृद्ध ने निरुपाय अपनी पुत्रवधू से सब हकीकत कही। उसने खिन्न होकर कहा—“खेद है कि घर में तो केवल गाय का ताजा छाछ ही है। और कुछ खाने योग्य पदार्थ नहीं है।”

वृद्ध ने दुःखी होकर एक बार फिर राजकुमारों से भोजन की तैयारी तक रुकने का आग्रह किया—पर उन्होंने कहा—“आदरणीय, आग्रह करके हमारे प्रवास में बाधा मत डालिए। जो कुछ भी घर में उपस्थित हो वही ले आइए।”

तब वृद्ध की पुत्रवधू—काँसे के कटोरी में गाय का छाछ लेकर राज-पुत्रों के पास आई, और आँखों में आँसू भरकर कहा—“हमारी जन्म-भूमि के राजकुमारों की चरणरज हमारी भोपड़ी पर गिरी, यह अलभ्य लाभ हमें मिला। इस अवसर पर जितना भी सत्कार हमसे बन पड़े थोड़ा है। पर दुर्भाग्य है कि राजा का सत्कार हमें छाछ से करना पड़ रहा है। परन्तु आपको जाने की जल्दी है। घर में तो केवल यह छाछ ही है।”

“तो सद्गुणी बहिन, तुम संकोच क्यों करती हो। यह तो गोरस अमृत के समान है। लाओ दो।”

उन्होंने बड़े प्रेम से छाछ पी। और अब उन्हें इस बात की चिन्ता हुई कि उसे क्या दें। साधारणतया यह नियम है कि कोई उच्च पदस्थ पुरुष जब अपने से निम्न श्रेणी के यहाँ अतिथि होता है तो उसका आतिथ्य सेवा कहाती है। और उस सेवा के बदले सम्माननीय अतिथि को कुछ भेंट, उपहार सत्कार कर्ता को देना पड़ता है। नही तो अतिथि की महत्ता घटती है। राजकुमारों के पास तो देने योग्य कुछ भी न था। अतः वे बड़े संकोच और सोच में पड़े। सोच-विचार कर खंगार राजपुत्र ने कहा—“बहिन, तुम हमारी जन्मभूमि की अधिवासिनी तो हो पर तुम्हारा और तुम्हारे पिता का नाम क्या है?”

“महाराज मेरा नाम पार्वती है और मेरे पिता बालजी पुरुषोत्तम हैं।”

तब राजकुमार ने हँस कर वृद्ध गृहस्थ से कहा—“और महात्मा, आपका नाम क्या है?”

“मेरा नाम रामजी है। यह मेरी पुत्र-वधू है, मेरे पुत्र का नाम श्यामजी है।”

“लेकिन श्यामजी भाई तो कहीं नजर नहीं आते।”

“वे अपनी बड़ी बहिन के घर यहाँ से ५-७ गाँव के अन्तर पर गए हैं। एक ही दिन में आयेंगे।”

“ठीक है। जीवन रहा तो उनसे फिर मिलना होगा। अच्छा अब विदा।”

“तो प्रभु हमारी एक विनय है।”

“परन्तु अब हम अधिक विलम्ब नहीं कर सकते।”

“विलम्ब की बात नहीं महाराज। मेरी प्रार्थना यह है कि आपके साथ कोई वाहन नहीं है। प्रवास लम्बा है। हमारे पास एक घोड़ा है। उसे आप कृपा कर स्वीकार कीजिए। हम आपका कुछ भी आतिथ्य नहीं कर सके। अब आप यह स्वीकार करेंगे तो हमारे हृदय को यत्किंचित संतोष हो जायगा। कृपा कर इन्कार मत कीजिए।”

“भाई, आपका यह नजराना मैं खुशी से स्वीकार करता हूँ।”

बड़ई ने काठी जीन कस कर घोड़े को द्वार पर ला खड़ा किया। तीनों जन चलने को तैयार हुए। तो खंगार जी को एकाएक मियाना की दी हुई स्वर्ण मोहर की याद आ गई। उन्होंने प्रसन्न होकर वह मुहर गाँठ से निकाल कर कहा—“पार्वती बहिन, तुम्हारा यह धर्म-भाई संकट में है। अभी केवल यह एक मोहर तुम्हें कपड़ा के लिए देता हूँ। स्वीकार करो और आशीर्वाद दो कि जल्द तुम्हारा यह भाई तुम्हारे उपकार का व्याज सहित प्रति फल देने में समर्थ हो जाय।”

“हे वीर, आपकी ऐसी ही इच्छा है तो मैं मोहर लेती हूँ, मेरे लिए यह लाख मोहर के समान है। किन्तु याद रखना कि जब आप कच्छ के मिहासन पर विराजमान होंगे तो आपके राजतिलक के अवसर पर मैं इसी मोहर को आप पर न्योछावर करूँगी।”

इतना कहकर उसने बारंबार दोनों राजकुमारों की बलैया ली, और राजकुमार भी वृद्ध गृहस्थ से विदा लेकर अपने मार्ग पर अग्रसर हुए।

तीनों यात्री नगर गाँव पार करते, नगर के बाहर अज्ञात वास करते, गुजरात की ओर चलते चले गए। उन दिनों आज के जैसे यातायात साधन भी न थे। मार्ग वीहड़, रास्ते ऊबड़-खाबड़ तो थे ही, चोर डाकुओं का भी बहुत भय था। सबसे बड़ी कठिनाई अब इन्हें इस बात की थी कि इनके पास खाने-खर्च को कुछ भी न था। छुछुर बूटा के पास अफीम रखने की एक चाँदी की डिब्बिया थी। उसे बेचकर दो-तीन दिन ज्वार-बाजरा की रोटियाँ खाते चले गए। अन्ततः वे धुङ्गधरा नगरी में जा पहुँचे। अब उनके पास एक फूटी कौड़ी भी न थी।

नगर के बाहर एक धर्मशाला में उन्होंने उतारा लिया। थोड़ा सुस्ता लेने के बाद खंगार जी ने कहा—“छुछुर काका, अब खाने-पीने का क्या बन्दोबस्त होगा ? यह तो परदेश है तथा कोई जान-पहिचान भी

नहीं है। अहमदाबाद अभी बहुत दूर है। बिना खर्च-पानी के कैसे काम चलेगा।”

कुमार की इस बात से छछुर का हृदय भर आया। किन्तु उसने दोनों कुमारों को ढाढ़स दिया और कहा—“अब रात तो हमें जैसे-तैसे काटनी होगी। भोर में मैं नगर में जाकर कुछ प्रबन्ध करूँगा।” इतना कहकर छछुरबूटा दुःखित मन से चुप हो गया। राजपुत्र भी समय समझ कर भूखे सो रहे।

भोर होते ही नित्य कर्म से निवृत्त होकर छछुरबूटा नगर में गया। राजपथ और गली-कूचों में घूमते-फिरते वह एक साहूकार की पेढ़ी पर जा खड़ा हुआ। राम-राम जयगोपाल कर एक ओर बैठ गया। साहूकार नगर का गण्यमानी धनी था। तीन-चार मेहता-मुनीम बहीखाते खोले जमा-रोकड़ लिख रहे थे, दूसरी ओर रुपयों की गड्डी गिन-गिनकर मुत्सद्दी लोग थैलियों में भर रहे थे। एक गम्भीर मुद्रा वाला अघेड़ गृहस्थ सब काम देखता और जिस-तिस को आज्ञा देता जा रहा था।

एक विदेशी अनजाने आदमी को पेढ़ी पर चढ़ते देखकर साहूकार ने उसका स्वागत सत्कार किया। पान-सुपारी दी और कहा—“माई, कहाँ से आए हो। किधर जाने का इरादा है। और यहाँ हमारे पास आने का आपका क्या प्रयोजन है।”

छछुर ने कहा—“मैं परदेशी मुसाफिर हूँ और काम से ही आपकी सेवा में आया हूँ। मैं एक गराथिया सरदार का नौकर हूँ। मेरे मालिक को शत्रु ने दगा से मार डाला और उसकी स्त्री सती हो गई। मैं उनके दो पुत्रों के प्राणों की रक्षा करके उन्हें शत्रु के पंजे से बचा गुजरात ले जा रहा हूँ। वहाँ हमारे स्वामी का एक शक्ति-सम्पन्न सम्बन्धी है। हम बड़ी ही उलझन में घर से निकले। और राह खर्च हमारा समाप्त हो गया।

इसलिए आप कृपा कर हमारी एक हुण्डी ले लीजिए जिससे हम अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँच जायँ।”

साहूकार ने सब बात सुनकर कहा—“भाई रुपए-पैसे का देन-लेन इस तरह नहीं होता। एक अपरिचित मुसाफिर की हुण्डी मैं कैसे सकार सकता हूँ। हाँ, इस नगर में तुम्हारी जान-पहचान का कोई मातृवर आदमी हो, और वह तुम्हारी जमानत दे दे तो देने न देने की बात पर विचार हो सकता है।”

“किन्तु यहाँ हमारी न कोई जान-पहचान है और न कोई सगा-सम्बन्धी। मैं कोई जमानत नहीं दे सकता।”

“तो मैं भी रुपया तुम्हें नहीं दे सकता।”

लुच्छर ने कुछ सोचकर कहा—“सेठ, मैं आपसे कोई हजार दो हजार रुपया नहीं माँगता। केवल पच्चीस-तीस रुपया ही हमें चाहिए। और यह रकम आपको एक महीना ही में वापस कर दी जायगी। विपत्ति में पड़े सदगृहस्थ की सहायता करना आपका धर्म है। आगे जैसी आपकी मर्जी।”

“पर भाया, बिना जामिन के रुपया कैसे मिले?”

“तो मैं अपने धर्म की जामिन देता हूँ।”

साहूकार ने हँसकर कहा—“भाई, धर्म की बात तो सतयुग की है यह तो कलियुग है।”

“खैर, तो जामिन तरीके मैं अपने-आपको आपका बन्धक रखता हूँ। कुमारों के साथ दूसरा कोई आदमी आप भिजवा दें जो वापसी में वहाँ से रुपया भी लेता आएगा। धर्मपूर्वक शपथ करके कहता हूँ कि मैं बिना आपका ऋण चुकाए यहाँ से नहीं जाऊँगा।”

“नहीं भाई! इन बातों से काम नहीं चल सकता। जी चाहे तो

दो चार बार भोजन कर लो । लेकिन रुपया इस प्रकार नहीं मिल सकता ।”

“खैर, आप कुछ माल रखकर तो रुपया दे सकते हैं । आप मेरी यह तलवार रख लीजिए । इसका मूल्य उस रकम से चार गुना अधिक है जो मैं आपसे माँगता हूँ । तलवार रख लीजिए और मैं भी बन्धक रहूँगा । आप इस समय हमारी सहायता कर दीजिए ।” इतना कहकर छच्छर ने तलवार साहूकार के सामने रख दी ।

साहूकार ने तलवार म्यान से निकालकर देखा, वह सौ रुपयों से अधिक मूल्य की ही थी । कुछ सोचकर उसने कहा—

“लेकिन यहाँ रहकर तुम क्या करोगे ?”

“मैं कपड़ा सीना जानता हूँ ।”

साहूकार की लड़की का ब्याह था । कपड़ा सीने वाले दर्जी की उसे आवश्यकता थी । अतः प्रसन्न होकर उसने कहा—“ठीक है, तुम कुमारों को यहाँ ले आओ, तुम्हारा काम हो जायगा ।”

छच्छर दोनों कुमारों को वहाँ ले आया । कुमारों की मुखकान्ति और तेज देखकर साहूकार ने अभ्युत्थान देकर उन्हें गद्दी पर बैठाया । भोजन का समय आ लगा था । साहूकार ने आग्रह करके तीनों को भोजन कराया । बाद में पान-सुपारी से सत्कृत करके साहूकार ने तीस रुपया छच्छर के सामने रख दिया । और एक आदमी को बुलाकर कहा—“इन कुमारों को लेकर तुम्हें कल भोर में ही रवाना होना होगा । अभी एक ऊँट भाड़े पर ठीक कर लो । दोनों कुमारों को यथास्थान पहुँचा कर तथा तीस रुपया लेकर आ जाना । तुम्हें तुम्हारे वेतिया के अतिरिक्त रोजाना एक अधेला मेहनताना मिलेगा ।

नौकर ने स्वीकार किया । रात को तीनों जनों ने वहीं विश्राम किया । राजकुमार अनिच्छापूर्वक आँखों में आँसू भर कर छच्छर से विदा हुए । छच्छर से छूट होने पर राजकुमारों को दुःख तो हुआ ही, छच्छर भी

आँसू बहाने लगा । पर वह अवसर ही ऐसा था । जी मसोस कर रह गया । उसने अन्त में आँसू पोंछकर कहा—“मेरे स्वामी, मेरे वियोग का दुःख न मानना । जल्दी ही अहमदाबाद पहुँचना । मैं सेठ का ऋण चुकाकर आपसे आ मिलूँगा । दिल को कड़ा करिए राजकुमार । अधीर मत हूजिए । आप क्षत्रिय हैं ।”

राजकुमारों ने छच्छर तथा साहूकार को नमस्कार किया । खंगारजी घोड़े पर और सायबजी सेवक के साथ ऊँट पर सवार होकर प्रस्थान किया ।

१८

घ्रांगवरा से चलकर दोनों राजकुमार आठ गाँव का रास्ता पार कर एक बड़े गाँव की सीमा पर पहुँचे । गाँव की सीमा पर एक प्रशस्त तालाब, शिवाला और दो-तीन कुएँ थे । गाँव के बहुत पुरुष तालाब में नहा रहे थे । ग्राम्य-बधुएँ आपस में चुहल करती कुआँ से जल भर रहीं थीं । बहुत भद्र पुरुष देव दर्शन के लिए आ-जा रहे थे ।

मनोरम स्थान देख और सायंकाल का समय निकट जान कुमार ने वहाँ रात काटने का निश्चय किया । सेवक ने देवालय के चबूतरे पर जाजम बिछा दी । घोड़े और ऊँट को वृक्षों से बाँध दिया और स्वामी की आज्ञा ले गाँव की ओर दाना-चारा और भोजन-सामग्री की व्यवस्था करने चला गया ।

इसी समय एक तेजस्वी पुरुष घोड़े पर सवार हो वहाँ आया । उसके साथ ५-७ सेवक थे । पुरुष की आयु पचास से ऊपर होगी । भरा हुआ

रुआबदार चेहरा, बड़े-बड़े गंगा-जमनी गलमुच्छे । अंग पर सफेद जामा, सिर पर सफेद पाग, कण्ठ में रत्न-जटित कंठा । फेंट में तलवार और कटार, लाल-लाल बड़ी-बड़ी आँखें । राजसी धज ।

वह दोनों राजकुमारों पर एक नजर डालता हुआ देवालय में चला गया । देवसम्मान के बाद उसने कुमारों के निकट आकर मीठे ममता भरे स्वर में कहा—“भाया, तुम कौन हो और कहाँ जाने का विचार है । देखने में तुम सुकुमार और किसी बड़े घर के कुलदीप प्रतीत होते हो । फिर क्या कारण है कि अकेले बिना सेवक-चाकर इस अल्पवय में विदेश यात्रा कर रहे हो ।

“महाशय, आप भद्र पुरुष हैं । बड़ी कृपा थी कि हमारा हाल-चाल पूछा । हम दूर देश के निवासी परदेशी हैं । गुजरात जाने का इरादा है । आज रात इस गाँव में निवास करेंगे ।”

“पर भाया, तुम्हारा गाँव-नगर कौन सा है, पिता जी का क्या नाम है । किस कुल के तुम सूरज-चाँद हो । मुझे बताओ ।”

“श्रीमान् ! दूरदेश के अज्ञात पुरुषों के नाम-धाम जानने से क्या प्रयोजन है । हम एक सरदार सामन्त के पुत्र हैं और समय के फेर से हमें यह यात्रा करनी पड़ी है ।”

“तो भाया, मैं भाला राजपूत हूँ । मेरा नाम जालिमसिंह है । भालावाड़ दरबार का सामन्त हूँ । इस गाँव का स्वामी हूँ । तुम सरदार के कुँवर भला मेरे रहते मेरे ही गाँव में यहाँ गाँव से बाहर कैसे रात्रि व्यतीत कर सकते हो ? इससे तो मेरा अतिथि धर्म भ्रष्ट हो जायगा । चलो, मेरे भोपड़े में रात्रि विश्राम करो । पशुओं के दाना-चारा और भोजन के लिए चिन्ता करने की तुम्हें आवश्यकता नहीं ।”

“आप वयोवृद्ध हैं । हमारे पिता के समान श्रद्धास्पद हैं । कुलीन क्षत्रिय और दरबारी सरदार हैं । आपकी आज्ञा का उल्लंघन करने से

अविनय होगा। अतः आपकी आज्ञा है तो उसे शिरोधार्य करना ही हमारा कर्तव्य है।”

जालिमसिंह राजकुमारों को अपनी हवेली में ले गए। ऊँची गद्दी पर बैठाया। जलपान-सुपारी से सत्कार किया। जालिमसिंह के भाई-बन्द भी धीरे-धीरे आ जुटे। इधर-उधर की बात-चीत होने लगी। अन्धेरा होने पर कंदील और मसालें जला दी गईं। हुक्का की गुड़गुड़ाहट चलने लगी। जालिमसिंह ने गाँव के भाट देवभानु को बुला भेजा। थोड़ी ही देर में देवभानु वृद्धभाट दोनों राजपुत्रों का आगमन सुनकर वहाँ आ पहुँचा। वह उसी गाँव का निवासी था। उसने बड़े ध्यान से दोनों कुँवरों को देखा। फिर एक दीर्घ निश्वास लेकर जालिमसिंह की ओर देखकर कहा—“महाराज, कुछ दिन पूर्व मैं घूमता-धामता कच्छ पहुँच गया। वहाँ के धनी जाम हमीर ने मेरा बड़ा सत्कार किया। मुझे सोने का कड़ा—सोने की शाल, और एक मूल्यवान घोड़ा बख्शाया। जड़ाऊ पोशाक और एक हजार कोरों रोकड़ी का सराधन दिया। आज तक मैंने ऐसा उदार सज्जन और वीर दूसरा राजा नहीं देखा। पर महाराज, मैंने सुना है कि कच्छ के धनी जाम हमीर को जाम रावण ने अपने घर बुलाकर विश्वासघात करके मरवा डाला है। उनका विश्वासी सेवक छच्छर-बूटा उनके दोनों राजपुत्रों के प्राण बचाकर अहमदाबाद की ओर ले भागा है। इतना कहकर गढ़वी ने छिपी हुई नजरों से दोनों कुमारों को देखा। कुमार नीची नजर किए चुपचाप बैठे रहे।

जालिमसिंह ने कहा—“अरे, तब तो कच्छ में यह बड़ी दुःखदायी शोकजनक घटना घटी।”

गढ़वी ने दीर्घ निश्वास लेकर कहा—“ईश्वर की माया।” इसके बाद कुँवर खंगारजी की ओर देखकर कहा—“द्वारि, कृपा कर अपना परिचय तो दीजिए। मैं वृद्ध हो गया हूँ और मेरी नजर कमजोर हो गई है। निकट का भी स्पष्ट नहीं देख पाता हूँ नहीं तो मैं मुँह देखते

ही आपको पहचान लेता । मैंने सुना है कि आप किसी श्रीमन्त सरदार के कुलदीपक हैं । अन्नदाता, अपना खरा-खरा परिचय दीजिए ।”

राजकुमारों को जब गढ़वी ने दर्वार और अन्नदाता कहकर सम्बोधन किया—तो जालिमसिंह और उनके सब भाई बन्धु की आँखें राजपुत्रों की ओर उठ गईं ।

खंगारजी ने मन्द स्वर से नीची नजर करके कहा—“गढ़वीजी, हम सिंध देश के निवासी क्षत्रिय बालक हैं । किसी कारणवश गुजरात जा रहे हैं । इस गाँव में आए तो हमारे मुरब्बी जालिमसिंह ने अपरिचित होने पर भी हम परदेशियों को अपने घर लाकर इतना आदर सत्कार किया । इसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं ।”

गढ़वी ने खड़े होकर राजकुमार को जुहार करके कहा—“जय हो, जय हो, अन्नदाता, अब आप अधिक अपने को छिपाने की चेष्टा मत कीजिए । मैंने आपको पहचान लिया । मैंने आपका नमक खाया है । कैसे भला आपको न पहचानता । कच्छ के धनी, महाराज जाम । उठिए, भुजभर के भेंट कीजिए ।”

राजकुमार ने उठकर गढ़वी को आलिंगन में भर लिया । उनकी आँखों से भर-भर आँसू भरने लगे । जालिमसिंह और उनके भाई-ब्रादर भी सब उठ खड़े हुए । सबने राजकुमारों को जुहार किया और अंक भर कर मिले ।

भेंट विधि समाप्त होने पर खंगारजी ने गढ़ी पर बैठकर कहा—“आप लोगों ने जब हमें पहचान ही लिया है तो अब रहस्य गुप्त रखना व्यर्थ है । अब तो हम आपके शरणागत हैं ऐसा समझ कर हमारा परिचय किसी पर प्रकट मत कीजिए—क्योंकि रावण के घुड़सवार अभी भी चारों ओर हमारी तालाश में घूम रहे हैं । हमारे पास खर्च नहीं रहा था । इससे भ्रांगधरा के एक साहूकार के यहाँ छुछर काका को

जमानत पर रखकर हम आगे आए हैं। साहूकार का रुपया पहुँचने पर ही छुछुर काका छूट कर आ सकते हैं।”

सब बातें सुनकर जालिमसिंह ने सिर नवा लिया। उनकी आँखें भर आईं। कुछ देर बाद उन्होंने कहा—“महाराज, अब आप किसी बात की चिन्ता मत कीजिए। जाम रावण के दस हजार सैनिक भी अब आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। ईश्वर कृपा से हम सब समर्थ हैं। अब महाराज, आप दो दिवस यहीं विश्राम कीजिए। तब तक मैं छुछुर को यहाँ लाने की व्यवस्था करता हूँ।”

इतना कहकर उन्होंने अपने छोटे भाई वीरसिंह से कहा—“भाई वीरसिंह, तुम भोर होते ही सौ कोरी लेकर प्रांगधरा जाओ और छुछुर को छुड़ाकर सूर्यास्त से प्रथम ही यहीं लौट आओ। छुछुर के लिए वहीं से एक घाड़ा किराये पर ले लेना जिससे विलम्ब न हो।”

सब बातें अन्तःपुर तक भी पहुँची। ठाकुर जालिमसिंह की पत्नी एक हौसले वाली समझदार औरत थी। उसने इस अलम्य अवसर से अलम्य लाभ उठाने की ठान ठान ली। उसने जालिमसिंह को भीतर एकान्त में बुलाया और इस प्रकार वार्तालाप किया।

“आज जो कुमार हमारे यहाँ अतिथि होकर आए हैं, क्या ये राजकुमार हैं?”

“नहीं तो क्या, ज्येष्ठ तो कच्छ का युवराज खंगारजी हैं और दूसरा उनका भाई सायबजी।”

“तो इनका इस प्रकार यहाँ इस दीन-हीन अवस्था में आने का कारण क्या है?”

“बड़ी ही भयानक दर्दनाक घटना घटी है। कच्छ के धनी जाम हमीर को विश्वासघाती जाम रावण ने अपने यहाँ बुलाकर मरवा

डाला। और अब वह इन कुमारों की घात में है। नमक हलाल सेवक छच्छर इन्हें कच्छ से निकाल कर अहमदाबाद ले जा रहा था कि दैवसंयोग से ये हमारे ग्राम में आ निकले।”

“अहमदाबाद क्यों जा रहे हैं ये?”

“अहमदाबाद के सुल्तान महम्मद बेगड़ा को जाम ने पुत्री ब्याही थी, ये अपनी बहिन के पास इस आशा से जा रहे हैं कि सुल्तान से सैन्य सहायता लेकर कच्छ का अपना राज्य शत्रु से छीनें।”

“वह स्वामिभक्त सेवक कहाँ है?”

“भ्राङ्गधरा आते-आते इनका सब राह खर्च समाप्त हो गया। वहाँ एक साहूकार के यहाँ अपने को बन्धक रखकर उस सेवक शिरोमणि ने, तीस रुपया कर्जा लेकर इन्हें आगे भेज दिया। अब मैं वीरसिंह को सौ कोरी देकर उसे छुड़ाने भेज रहा हूँ।”

“तो आज दैवेच्छा से जो हमने इनका आतिथ्य सत्कार किया वह भविष्य में हमारे लिए अतिशय मङ्गलकारी और लाभदायक हो ऐसा उपाय करो।”

“ऐसा उपाय और कौन-सा हो सकता है।”

“मेरे मन में एक बात आई है—तुम्हें जँचे तो वह काम अवश्य ही हो जाना चाहिए।”

“कौन-सी बात तुम्हारे मन में आई है?”

“हमारी पुत्री नन्दकुमारी अब विवाह योग्य वय में हुई। उसे अब चौदहवाँ वर्ष लग रहा है। इधर यह राजपुत्र भी सोलह का किशोर है। क्यों न पुत्री के साथ राजकुमार का वाग्दान कर दिया जाय। वीरसिंह की कन्या राजमणि भी होशियार है। उसकी सगाई छोटे कुमार सायबजी से कर देनी चाहिए। इस कार्य से हम कन्या के ऋण-भार से अनायास ही मुक्त हो जाएँगे और हमारी पुत्री कच्छ की पटरानी होगी। उसके प्रताप से हमारी पुत्री का पुत्र कच्छ

का धनी होगा। इससे अधिक सौभाग्य और आनन्द की और बात क्या हो सकती है।”

“प्रिये, तुमने भली बात विचारी। मेरे ध्यान में तो यह बात आई ही न थी। परन्तु आज तक कच्छ में वाघेला वंश की कन्या ही पटरानी पद पर विराजती रही हैं।”

“तो हमारा भाला वंश भी कुछ हेठा वंश नहीं है। इस सम्बन्ध के होने से भाला वंश की कन्या से कच्छ की यह महारानी और उनके पुत्र कच्छ के भूपाल होंगे। इससे हमारे वंश की प्रतिष्ठा बढ़ेगी और यह एक ऐसी असाधारण घटना होगी जो हमारे वंश के गौरव में चार चाँद लगा देगी।”

“तुम्हारा विचार अच्छा है।”

“तो इस काम में विलम्ब करना ठीक नहीं है। कल साँझ तक वह सेवक लौट आयागा। और परसों प्रातःकाल ये राजपुत्र यहाँ से चले जाएँगे। इसी बीच यह मंगल कार्य सम्पन्न कर देना चाहिए। वाग्दान नहीं, पाणि-ग्रहण ही कल रात्रि को कर देना चाहिए। याद रखना विलम्ब अनिष्टकारक होगा। भाग्य ही से ऐसे सुयोग हाथ आते हैं। इन्हें हाथ से जाने देना अत्यन्त मूर्खतापूर्ण बात होगी।”

“यह तो घर बैठे गंगा आई है। इस गंगा में स्नान करके पवित्र होना ही हमारे लिए परम कल्याणकर है। तुम चिन्ता न करो। मैं भोर ही में सारी व्यवस्था करूँगा। तुम निश्चिन्त रहो।”

अन्तःपुर से भोजन तैयार होने की सूचना मिली । सब लोग भोजन करने के लिए उठ खड़े हुए । आसन-पाटे बिछाए गए । राजपुत्रों सहित सब लोग भोजन करने बैठे । जल भरी कलसिया और दूध की कटोरिया परसने के बाद दासी भोजन के थाल ले आई । थोड़े ही समय में विविध प्रकार के स्वादिष्ट भोजन तैयार किए गए थे । सब लोग विनोद-वार्ता करते हुए भोजन करने लगे । इसी समय राजकुमार खंगारजी की जो आँख उठी तो देखा कि जिस वारने में सब भोजन करने बैठे थे— उसमें जो रसोड़े का द्वार था, वहाँ खड़ी एक परम रूपवती बाला दरवाजे की आड़ में खड़ी दासी को आवश्यक सामग्री भीतर से देती जा रही है । दीपक के मन्द प्रकाश में वह दिव्य रूपिणी बाला ऐसी प्रतीत हो रही थी जैसे स्वर्ग की कोई दिव्य रूपिणी अप्सरा हो । बाला का अज्ञान यौवन से सुग्ध स्निग्ध उज्ज्वल चन्द्रविभव-सा मुखमण्डल, सुचिकुण्ड केशराशि, कोमल अलसी पुष्प के समान नासिका, प्रवाल की आभावाले अधरोष्ठ,

केले के नवीन पत्ते के समान आभा, कम्बुग्रीवा और कमान-सी भौंहों के नीचे मीन युगल-से नैन तथा नवीन यौवन का उकसता-सा वक्षस्थल अपूर्व शोभा विस्तार कर रहा था ।

खंगारजी अभी किशोर थे । यौवन के उद्दाम तेज से अज्ञात थे । पर दीपशिखा-सी इस बाला को देखते ही एक अनिर्वचनीय आनन्द की लहर उनके शरीर में दौड़ गई । सारा शरीर रोमाञ्चित हो उठा । उस चम्पकवर्ण बाला का मोहनी रूप उनके हृदय में घर कर गया । पर ज्योंही बाला की दृष्टि से उनकी दृष्टि मिली, उन्होंने अपनी आँखें नीची कर लीं ।

खंगारजी स्वयं भी एक अत्यन्त सुन्दर किशोर थे । अभी रेखें उनके मुख पर नहीं फूटी थीं । बाल-सुलभ भोलापन और चरित्र की सरलता उनके मुखमण्डल पर व्याप्त थी । परन्तु एक अनिर्वचनीय तेज और प्रभावशाली गम्भीरता इसी आयु में उनके मुख पर छाई हुई थी, जिसने उनके व्यक्तित्व को अत्यन्त आकर्षक बना दिया था । बाला भी न जाने कब से सुग्ध दृष्टि से खंगारजी को छिपी नजर से निहार रही थी । ज्योंही उसने राजकुमार को अपनी ओर देखते देखा—वह झपटकर किवाड़ की ओट में हो गई । खंगारजी बस वही एक झलक उसकी देख सके । परन्तु एक प्रच्छिन्न भावना उसके मन में भी उदय हुई । वह कौन ! आज यहाँ हैं कल चले जाएँगे । जाने की बात ध्यान में आते ही बाला की आँखों में आँसू आ गए । वह एकान्त में जाकर रोने लगी ।

उसने फिर एक बार वह रूप निहारने की चेष्टा की, परन्तु भोजन करके सब उठ गए । सब लोग बाहरी देहरी में आ बैठे । पान-सुपारी इलायची का आदान-प्रदान हुआ, विविध वार्तालाप, वाग्विलास हुआ । गढ़वी ने विरद गाई । बहुत रात बीते—सब ने निद्रा देवी की आराधना की ।

प्रभात में नित्य कर्म से निवृत्त होकर जालिमसिंह की देहरी में जमाव जमा। सब भाई-बन्द आकर बैठे। अमल-पानी हुआ। हुक्का का रङ्ग जमा। कसुवा आरोजा गया। अगम-निगम की बातें चली। श्री खंगारजी और सायबजी चुपचाप इस वार्तालाप का आनन्द लेते गए। कभी-कभी बीच-बीच में मुस्कुरा उठते। कभी खंगारजी के चंचल नयन भीतरी किवाड़ों की दरार में कुछ खोजने लगते। फिर कुछ सोचकर वे लाज से लाल हो नीचे को देखने लगते।

गढ़वी ने कसूवा की तीन-चार प्याली चढ़ाई। मूँछों पर हाथ फेरा। फिर जालिमसिंह की ओर देखकर कदा—“ठाकुर साहेब, एक श्रीफल, कुंकुम और थोड़ा अक्षत तथा जल से भरा एक कलश मँगाइए। जोशीजी को भी बुलवा लीजिए।”

जालिमसिंहजी ने सब वस्तु ले आने का संकेत किया। एक अनुचर जोशीजी को बुलाने चला गया। जोशीजी के आने पर गढ़वी ने उनके कान में मन्त्र फूँका। जोशीजी ने हँसकर सिर हिलाया। फिर श्रीफल पर कुंकुम से स्वस्तिक चिन्ह बनाकर खंगारजी से कहा—“पृथ्वीनाथ, कृपा करके जरा पूर्व दिशा में मुँह करके विराजिए।”

खंगारजी ने आश्चर्यचकित होकर कहा—“किन्तु आप लोग यह क्या कर रहे हैं, कृपा कर यह तो बताइए।” यह सुनकर गढ़वी ने खड़े होकर वरद बखानी और फिर उच्च स्वर से कहा—“प्रतापी जाम हम्मीरजी के उत्तराधिकारी और कच्छ के भावी भूपाल खंगारजी आप कृपा कर एक शब्द भी मुख से उच्चारण मत कीजिए। इस ब्राह्मण की आज्ञा का पालन कीजिए, और किसी प्रकार की कोई शंका मन में मत लाइए। आज शुभ शकुन का मुहूर्त है। हम सब आपके आधीन सेवक, आपके पसीने की जगह रक्त बहाने वाले, आपके लाभ कल्याण के लिए जो कुछ कर रहे हैं उसे मौन होकर स्वीकार कीजिए।”

गढ़वी के वचन सुनकर खंगारजी चुपचाप पूर्वाभिमुख हो सूर्यदेव को नमस्कार कर बैठ गए।

जोशीजी ने मङ्गलोपचार करके खंगारजी के मस्तक पर कुंकुम का तिलक दिया और अक्षत मस्तक पर वर्षा करके उनकी अंजलि में श्रीफल अर्पण करके कहा—“अखण्ड प्रताप, गो ब्राह्मण प्रतिपालक श्रीमन्महाराजाधिराज, इस मङ्गल विधि के बाद इस ग्राम के स्वामी ठाकुर जालिमसिंह की आयुष्मती पुत्री नन्दकुमारी का आपके साथ वैवाहिक शरीर सम्बन्ध का वाग्दान सम्पन्न हुआ। श्री ठाकुर जालिमसिंहजी की पुत्री नन्दकुमारी आपकी धर्म-पत्नी और कच्छ की पट्टमहारानी हुईं। श्री ठाकुर जालिमसिंह आपके पूज्य श्वसुर और आप उनके पूज्य जामाता प्रमाणित हुए। देवता अग्नि और भद्र पुरुष साक्षी हैं। यह सम्बन्ध देव साक्षी के कारण अटूट है।

खंगारजी ने श्रीफल को स्वीकार कर लिया। परन्तु कुछ क्षण बाद खिन्न मुद्रा में कहा—“पूज्य, जालिमसिंहजी ने हमारी इस दुरवस्था में जो प्रेम और अनुग्रह प्रकट किया है, उसका आभार मानने को हमारे मुँह में शब्द नहीं है। परन्तु निरुपाय हमें कहना पड़ता है कि इस काम में शीघ्रता न की जाती तो उत्तम था। अभी हम विपत्ति में हैं। राज्य-भ्रष्ट हैं। अभी हमें अहमदाबाद जाना है। वहाँ से सुलतान की सहायता लेनी है। सहायता मिल ही जायगी यह नहीं कहा जा सकता। सहायता मिलने पर भी कच्छ जाकर युद्ध करना होगा। युद्ध में जय-पराजय का भी कोई ठिकाना नहीं है। परिणाम अनिश्चित है। जीवन-मरण की बेला भी आ सकती है। इन्हीं सब बातों पर विचार करके मैं खिन्न और चिन्तित हूँ, आगे आप पूज्य गुरुजनों की जैसी मर्जी।”

खंगारजी के ये उद्गार सुनकर गढ़वी ने तेजपूर्ण वाणी से कहा—“अन्नदाता, सब कार्य देवाधीन होते हैं। इस सम्बन्ध में आपको बोलने का प्रसंग नहीं। ठाकुर जालिमसिंह की पुत्री आपकी अर्धाङ्गिनी हो चुकी। उनके भाग्य में कच्छ के भूपाल की पटरानी होने का लेख विधाता ने लिख दिया है। उसे कौन मिथ्या कर सकता है। आज से आपका भाग्योदय आरम्भ हुआ। यह गढ़वी का वचन है। हम शारदा के वरद पुत्र हैं। हमारा वचन शारदा माता का वचन है। इससे आप शंका मत कीजिए।

खंगारजी ने दोनों हाथ मस्तक पर लगाकर कहा—“जैसी आप गुरुजनों की आज्ञा, परन्तु भालावंश का कच्छ के जाडेजावंशी राजकुटुम्ब का यह प्रथम ही शरीर-सम्बन्ध हांता है, भगवान् शूलपाणि यह सम्बन्ध शुभमूलक करें, ऐसा आशीर्वाद आप दीजिए।”

सबने सहर्ष आशीर्वाद दिया। अब जोशीजी ने दूसरा वाग्दान

जालिमसिंह की भतीजी राजमणि का सायबजी को करके तिलक श्रीफल दे दिया ।

सब ने हर्षनाद जय-जयकार किया । भीतर स्त्रियों ने मंगल गीत गाये । जालिमसिंह ने ब्राह्मणों को भोजन कराया । दरिद्रों को दान दिया । तथा गढ़वी को आदरपूर्वक सिरियावर दिया । अब खंगारजी और सायबजी अतिथि के स्थान पर जामाता के सत्कार के भागी हुए ।

अभी ये सब मङ्गलोपचार हो ही रहे थे कि गढ़वी देवभानु, जालिम सिंह और वीरसिंह ने आकर राजकुमार से परामर्श किया। गढ़वी ने कहा—“महाराज कच्छ नरेश, हमारे ठाकुर साहेब की तथा उनकी धर्म-पत्नी की यह शुभेच्छा है कि आज ही शुभ सान्ध्य-बेला में आप श्री का तथा सायब जी का पाणिग्रहण संस्कार भी सम्पन्न हो जाय। अनेक बातों पर विचार करके यह उपयुक्त प्रतीत होता है। इससे उभय पक्ष के सम्बन्ध दृढ़ होंगे।”

खंगारजी ने कुछ सोचकर संकोच के साथ कहा—“आप अच्छी तरह जानते हैं, कि इस समय हमारे पास एक फूटी कौड़ी भी नहीं है। और हम अपनी कुल प्रतिष्ठा के अनुसार विवाह समारम्भ करने में असमर्थ हैं। यहाँ हमारे कोई बुजुर्ग, गुरुजन भी उपस्थित नहीं हैं।

इसलिये जब तक हम अहमदाबाद से वापस न लौटें तब तक यह कार्य मुलतवी रखना ही मुझे ठीक प्रतीत होता है ।

गढ़नी ने गूढ़ अभिप्राय की दृष्टि से जालिमसिंह की ओर देखा—फिर उनका संकेत पाकर कहा—“अन्नदाता, इस सम्बन्ध में आप चिन्ता न करें । आपको हम ५ हजार कोरी उधार दे देंगे । यद्यपि आपकी कुल प्रतिष्ठा के उपयुक्त तो नहीं—परन्तु समयानुसार विवाह समारम्भ निभ जायगा । अधिक आनन्द उत्सव यथासमय होगा । परन्तु लग्न समारम्भ अब मुलतवी रखना उचित नहीं है ।”

खंगार जी ने तब नीची नजर करके कहा—“जैसी आप गुरुजनों की मर्जी । उनका संकेत पाते ही जालिमसिंह झपाटे से विवाह की तैयारियाँ करने लगे । दोनों राजकुमारों को एक पृथक घर में ठहरा दिया और अपने यहाँ माडना स्थापित कर मंगलोपचार और गीतवाद्य का आरम्भ कर दिया । गोधूली बेल में राजपूतों की रीति के अनुसार दोनों राजपूतों के खांडा के साथ, ठाकुर की दोनों कन्याओं की आधी लग्न-विधि पितृ गृह में सम्पन्न हुई । अर्थात् खांडे के साथ दो मंगल फेरे फेरे गए । बाद में पति निवास गृह में जाकर बाकी दो फेरे पूरे किए । इस प्रकार दोनों राजपुत्रों का विवाह सम्पन्न हो गया और दोनों कुमारियों ने अखण्ड सौभाग्यवती का पद प्राप्त कर नवजीवन में प्रवेश किया ।

समारोह अभी हो ही रहा था कि छुच्छुरवृटा भी आ पहुँचा । सब मंगल समाचार सुनकर दोनों कुमारों का गाढ़ालिङ्गन कर प्रेमाश्रु बहाने लगा ।

मंगलोपचार सम्पन्न होने के उपरान्त दम्पति युगल ने शयन मन्दिर में प्रवेश किया। खंगार जी और नन्दकुमारी का प्रथम दृष्टि सम्मेलन हुआ। नन्दकुमारी सोलह शृङ्गार कर शयन कक्ष में पुष्प शैया पर बैठी। खंगार जी ने खांडा के साथ वीर वेश में शयन-कक्ष में प्रवेश किया तो बधू ने मस्तक नवाकर उनका नमन किया। आगे बढ़ कर पुष्प शैया पर बैठाया तथा अपने हाथ से स्वर्ण पात्र में मदिरा डाल कर पेश की।

मदिरा का पात्र हाथ में लेकर खंगार जी ने ससम्मान नन्दकुमारी का हाथ पकड़ अपने पास शैया पर बैठाया। दोनों ने एक ही प्याले से मदिरा पान किया। फिर खंगार जी ने कहा—“प्रिये, विचित्र संयोग हुआ यह। नहीं जानता आगे शुभ होगा या अशुभ। परन्तु मैंने तो प्रथम दृष्टि में ही तुम्हें अपना मन दे दिया था। मैंने स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी, यह अलभ्य रत्न मुझे प्राप्त होगा।”

अभी ये बातें हो ही रहीं थी कि दासी ने शयन मंदिर का द्वार आ खटखटाया। नन्दकुमारी ने द्वार खोला तो दासी ने कहा—“खम्भा महाराज, आपको श्रीमान ठाकुर साहेब ने किसी अत्यावश्यक कार्य से अभी ज्योदियों में याद फर्माया है। कृपया अभी पधारिए। स्वामी छच्छर भाई सहित आपका बाट जोह रहे हैं।”

खंगार जी ने जल्दी जल्दी वस्त्र धारण किए और एक विषाद भरी दृष्टि नव बधू पर डाली और दासी के साथ ज्योदियों में आए।

ज्योड़ी में ठाकुर जालिमसिंह, छच्छर, वीरसिंह और एक अपरिचित पुरुष बैठे वार्तालाप कर रहे थे। राजकुमार के पहुँचते ही जालिमसिंह ने उस अपरिचित पुरुष से कहा—“रणमल्लजी, आपने जो बात हमसे कही है—वह कुमार जी को भी सुना दो।”

रणमल्ल ने कहा—“महाराज, मैं अभी घांगधरे से आ रहा हूँ। वहाँ जाम रावण के ५०० घुड़सवार आपको तलाश करते हुए आपको पकड़ने आए हैं। आप यहाँ विराज रहे हैं, यह बात मुझे ज्ञात न थी। मेरी पत्नी ने आपके यहाँ विराजने तथा विवाह मंगल की वार्ता कही—इससे उल्टे पैर सूचना देने में सेवा में हाजिर आया हूँ जिससे आत्मरक्षा का पूरा प्रबन्ध किया जा सके। संभव है वे घुड़सवार यहाँ भी आ पहुँचे। आप अहमदाबाद पधार रहे हैं, यह बात उन्हें ज्ञात है।” वीरसिंह ने कहा—“आत्मरक्षा का उपाय तत्काल होना आवश्यक है। विलम्ब से हानि की संभावना है।”

खंगार जी ने रणमल्ल के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और जालिमसिंह की ओर देखकर कहा—“आपका क्या विचार है?”

“विचार कैसा, आप हमारे अतिथि और जामाता हैं। आपकी रक्षा करना मेरा मेरे सब सम्बन्धियों का तथा मेरे प्रजाजनों का धर्म है।

जाम रावण के सैनिक यहाँ आएँगे तो हम उनका तलवार से स्वागत करेंगे और अवसर आया तो आपकी रक्षा में प्राण त्याग देंगे।”

परन्तु छच्छर ने गंभीरता से कहा—“मुझे की बात यह है कि हमें अवश्य ही अहमदाबाद जाना है। बिना सुलतान की सहायता के कच्छ का राज्य कुमार को प्राप्त नहीं हो सकता। फिर यहाँ अनावश्यक युद्ध का खतरा लेने से कोई लाभ नहीं है। हमें एक-दो दिन में यहाँ से प्रयाण करना ही है। तो उत्तम है अभी इसी क्षण हम प्रयाण कर दें। यही सब भाँति समीचीन है। इसलिए आप इसी क्षण हमें विदा कर दीजिए, अहमदाबाद अब अधिक दूर नहीं है, और हमें आशा है कि हम सकुशल वहाँ शीघ्र पहुँच जाएँगे।”

छच्छर का समर्थन रणमल्ल ने भी किया। राजकुमार भी सहमत हुए। वीरसिंह ने भी इस सम्मति को उपयुक्त कहा। तब जालिमसिंह ने कहा—“जब ऐसा ही विचार है तो परमात्मा की इच्छा।” उन्होंने एक ठण्डी साँस ली। फिर कहा—“जब अभी प्रयाण करना है तो विलम्ब क्यों। आपके पास एक घोड़ा है। मैं अपना सर्वश्रेष्ठ एक ऊँट तैयार कराता हूँ। दो राजपूत सवार आपको अहमदाबाद तक पहुँचा आएँगे। हाल तुरत एक हजार कोरी रोकड़ी साथ लेते जायँ। जिससे अहमदाबाद में जाते ही हाथ न पसारना पड़े।

जालिमसिंह की उदारता देख खंगारजी के नेत्रों में आँसू उमड़ आए। उन्होंने कहा—“परमात्मा आपके उपकार का बदला देने की सामर्थ्य शीघ्र दें।”

परन्तु जालिमसिंह ने आँसू पोंछकर उधर से मुँह फेर लिया और वीरसिंह को तैयारी का आदेश दिया।

सायबजी को बुलाने सेवक गया। राजपुत्र अपनी पत्नी से विदा हाने अन्तःपुर में आए।

नन्दकुमारी ने आँखों में आँस भरकर कहा—“सब बातें मैंने सुन ली है। इस कटाकटी के प्रसंग में मैं आपका वाचक नहीं होऊँगी। इस दासी को भूलिएगा नहीं। और जल्द से जल्द चरण सेवा का अवसर प्रदान कीजिएगा। इतना कहकर नन्दकुमारी खंगारजी के वत्न पर गिरकर फफककर रोने लगी।”

राजकुमार ने उसे आलिंगन में भरकर कहा—“प्रिये, तुम्हारा धैर्य और विवेक प्रशंसनीय है, मैं एक क्षण के लिए भी तुम्हें नहीं भूलूँगा। मेरा शरीर वहाँ और मन यहाँ रहेगा। विछोह हो रहा है। निरुपाय हूँ। विदा।”

“प्रिय प्राणेश्वर ! शीघ्र पधारना।”

राजकुमार चले आए। नन्दकुमारी पलंग पर कटी पतंग की भाँति गिर गई।

ब्योढ़ी में अकेले जालिमसिंह खड़े थे। उन्होंने कहा—“चलिए, ग्राम के बाहर वाहन तैयार है। दोनों वहाँ आए। अपने घाँड़े पर खंगारजी बैठे। ऊँट पर सायबजी और छुछुर। दूसरे ऊँट पर रणमल्ल और रणमल्ल की भतीजा सवार हुआ। चलती बार दो सौ कोरा गढ़वी को भेंट करके खंगारजी ने कहा—“समय प्रतिकूल है, अभी यह फूल की मोखड़ी स्वीकार कीजिए। समय अतुकृत हाने पर योग्य सत्कार करूँगा।”

“अन्नदाता, यह क्या आज्ञा होती है। इस समय तो आपको ही धन की आवश्यकता है, कृपा कर इन्हें वापस स्वीकार कीजिए। जब शुभ समय होगा तब देखा जायगा।”

“परन्तु दिया दान वापस नहीं लिया जाता, कहकर उन्होंने सबको प्रणाम कर घोड़ा बढ़ाया। ऊँट भी पीछे चले। आधे गाँव तक जालिमसिंह वीरसिंह और गढ़वी साथ गए। बाद में सबको लौटाकर राजपुत्रों की सवारी तेजी से अहमदाबाद की ओर चली। गाँव में किसी को भी राजकुमार के प्रस्थान का पता नहीं लगा।

आकाश के तारे देख रहे थे।

जालिमसिंह के गाँव से निकलकर राजकुमारों का यह काफला रातो-रात ४-५ गाँवों को पार कर गया। वे यथासंभव बस्ती से बचकर, राजमार्ग से हटकर, पहाड़ों की तलहटी में तथा खेतों, खड्ड और नदियों के कल्लारों, ब्रीहड़ों में होकर आगे बढ़ते चले गए। मार्ग में अल्प विश्राम, अल्पाहार और अल्प निद्रा लेते—केवल गन्तव्य स्थल पर शीघ्रातिशीघ्र पहुँचने का ध्रुव ध्येय मन में धारण कर आगे बढ़ते चले गए। इस प्रकार निरन्तर छै दिन तक चलते रहकर वे साबरमती के पश्चिमी तट पर जा पहुँचे। उन दिनों साबरमती अहमदाबाद के निकट ही बहती थी। नदी के तट पर नीलकण्ठ, खड्गधरेश्वर तथा भीमदेव महादेव के भव्य शिवाले थे। उन्हीं में से एक शिवाले की पौर में इन्होंने उतारा लिया। नित्यकर्म और स्नान, सन्ध्या वन्दन किया, फिर भोजन तैयार कर तथा भोजन कर रात्रि व्यतीत की।

जाम हम्मीर ने अपनी रखेल पासवान की पुत्री कुमा बाई मुहम्मद बेगड़ा को व्याही थी। कुमा बाई का सगा भाई पासवान का पुत्र अलैयाजी भी वहीं बहन के पास अहमदाबाद में रहता था। अलैयाजी को एक छोटी-सी जागीर देकर और एक सत्पात्री कन्या से उसका विवाह कराकर सुलतान ने उसके लिए प्रथक हवेली बनवा दी थी—जहाँ अलैयाजी आराम से रहते और सुलतान के दरबार में हाजिरी बजाते थे।

भोर होते ही यह विचार तय पाया कि छच्छर और रणमल्ल जाकर पहिले अलैयाजी को खबर करें और तब उसके द्वारा सुलतान का रुख देखकर सुलतान से सहायता माँगी जाय।

छच्छर और रणमल्ल नगर में चले गए और रणमल्ल के भतीजे ने भोजन की तैयारी की। दोनों राजकुमार गद्दी पर आराम करने लगे।

तीसरा पहर दिन बीतते-बीतते अलैयाजी को साथ लेकर छच्छरबूटा आ पहुँचा। अलैयाजी सबसे गले मिले। बड़े भाई खंगार से मिलकर प्रेमाश्रु बहाए। अब सबने मिलकर मन्त्रणा की, अलैयाजी ने कहा—“पूज्य पिताजी के साथ जाम रावण ने जो विश्वासघात किया उसका समाचार हमने सुन लिया था। इस शोक समाचार को सुनकर हमारी बहिन ने बहुत रुदन किया। तभी से हम सब आपकी कुशलता के लिए व्यग्र थे। हमें भय था कि दुष्ट जाम रावण आपकी भी हत्या न कर दे। आपने बहुत अच्छा किया जो यहाँ पधारे। अब आप मेरे गरीबखाने पर पधारिए। यथावसर सुलतान से सहायता की प्रार्थना की जायगी।”

“अभी सुलतान का हमें रुख ज्ञात नहीं है। हम एकाएक कैसे इस दीनावस्था में सुलतान के समक्ष जाँय।”

“सुलतान आपका सम्बन्धी है; वह सज्जन पुरुष है। आपको अवश्य सहायता देंगे।”

“फिर भी भाई, सब बातों पर भलीभाँति विचार कर लेना आवश्यक है। जल्दी में जो कार्य होता है, उसमें दोष रह जाते हैं। जिनसे सब काम ही बिगड़ जाते हैं। देखो हम यहाँ सुलतान की सहायता माँगने ही आए हैं। जब तक सुलतान की सहायता हमें नहीं मिलती। हमारे कार्य की सिद्धि नहीं हो सकती। परन्तु हम इस दीन-हीन भिक्षुक की स्थिति में सुलतान के समक्ष जाँय तो यह हमारे आत्म सम्मान के विरुद्ध है।”

“तो आपका क्या विचार है ?”

“हम चाहते हैं कि हम कुछ दिन गुप्त वेश में यहाँ अहमदाबाद में रहें। कोई हमें न जाने। हमारा आना सर्वथा गुप्त रहे। यथावसर सुलतान को प्रसन्न करके तथा सुलतान पर कुछ उपकार करके हम प्रकट होना चाहते हैं। तभी हमें वह सहायता प्राप्त हो सकती है। जिसकी हमें आवश्यकता है। सत्ताधारी पुरुष पर विपत्तिग्रस्त पुरुष का प्रभाव नहीं पड़ता। फिर, हम तो अभी बालक ही हैं।”

“तो इस सम्बन्ध में आप मुझे क्या आज्ञा करते हैं।”

“बस, तुम नगर के किनारे एक उपयुक्त एकान्त मकान हमारे लिए किराए पर ठीक कर दो। जहाँ हम अपना गुप्त वास कर सकें। आपके साथ आपके घर में रहने से हमारा यहाँ आना गुप्त न रह सकेगा। सुलतान तक बात पहुँच जायगी। अभी आवश्यक रुपया पैसा हमारे पास है। तुम्हें इस सम्बन्ध में चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। सब बात सुनकर और आगे-पीछे की बातें सोचकर अलैयाजी ने कहा—“भले, आपका ऐसा ही विचार है तो सब प्रबन्ध कल तक हो जायगा। परन्तु आज की रात तो हमारे घर पर ही चलकर विश्राम कीजिए। एक रात में भेद खुलने का कोई भय नहीं है।”

“नहीं, नहीं। कल रात भी हमने यहाँ गुजर की और आज भी यहीं।

रहेंगे। बस तुम मकान की व्यवस्था कर दो। और अभी हमारी बहिन को भी हमारे सम्बन्ध में कुछ मत कहो।”

अलैयाजी ने स्वीकार किया। अपनी आधीनता प्रकट करते हुए उन्होंने कहा—“हमारे आपके पिता एक हैं। इस प्रकार हम आप भाई हैं। परन्तु आप कच्छ राज्य के उत्तराधिकारी हैं, इसलिए आपकी आधीन प्रजा भी हैं। मैं हर तरह आपकी आज्ञा के आधीन हूँ।”

अलैयाजी की यह बात सुनकर खंगारजी ने उन्हें कण्ठ से लगाया। और कहा—“भाई, तुम्हारी माता भले ही पिताजी की खामत थी। परन्तु मैं तो उन्हें माता ही समझती हूँ। इसके अतिरिक्त उन्होंने मेरी माता के साथ ही पिताजी की चिता पर आरोहण किया है, इसलिए मेरे और तुम्हारे बीच कोई अन्तर नहीं है। सांसारिक रुढ़ि विधि से कच्छ राज्य का मुझे अधिकारी समझा जाता है—पर इससे हमारे भावभाव में कोई अन्तर नहीं आ सकता। जब मैं कच्छ के सिंहासन पर बैठूँगा तो तुम्हारा आसन मेरे सिंहासन के दाहिने भाग में रहेगा। तथा बिना तुम्हारी सम्मति के मैं कोई राज्य-कार्य नहीं करूँगा।”

इन बातों को सुनकर अलैयाजी ने पुनः खंगारजी से मिलकर भेंट की और नगर की ओर चले गए, रात्रि सब लोगों ने वहीं व्यतीत की। दूसरे दिन दोपहर होते-होते अलैयाजी ने दिल्ली दरवाजे के निकट एक उत्तम मकान खंगारजी के रहने योग्य ठीक कर लिया। उसमें आवश्यक सामग्री, रसोइया, सेवक और दो-तीन सुन्दरी दासियों की भी व्यवस्था कर दी। सन्ध्या होने से प्रथम ही दोनों राजकुमारों ने नवीन आवास में आकर अपना डेरा डाला।

२५

इस समय जहाँ अहमदाबाद का भव्य नगर बसा है—वहाँ किसी जमाने में एक गहन अगम्य अरण्य था। इस समय जहाँ अहमदाबाद का प्रसिद्ध माणिक चौक है—वहाँ उन दिनों 'सावरमती का प्रवाह' था। पद्म पुराण में सावरमती को साभ्रमती लिखा है। इस स्थान पर उस समय नदी का विस्तार दो मील तक फैला हुआ था और साभ्रमती तट पर इस गहन बन में एक आशापल्ली गाँव था। जिसमें एक छोटा सा भील सरदार रहता था। वह आस-पास की भूमि का स्वामी और भीलों का सरदार था। उसकी कन्या का नाम गुर्जर कुमारी था। गुर्जर कुमारी का रूप यौवन अद्वितीय था। वह अल्हड़ बछेड़ी की भाँति इस कानन में निर्वन्द फिरती और साभ्रमती के विमल जल में किलोल करती थी।

उन दिनों गुजरात की राजधानी पाटन थी। इस समय पाटन में सुलतान मुजफ्फरशाह का अमल था। जब मुजफ्फरशाह मर गया तो उसका पुत्र अहमदशाह सुलतान हुआ। परन्तु उसके चचा फिरोजशाह ने भड़ौच में विद्रोह का भण्डा खड़ा किया और अपने को सुलतान कहने लगा। इस पर युवक सुलतान अहमदशाह सेना लेकर भृगकद (भड़ौच) पर चढ़ दौड़ा और घमासान युद्ध करके फिरोजशाह को परास्त किया। युद्ध में जय प्राप्त करके जब वह लौट रहा था तब उसने इसी गहन बन में साभ्रमती के तीर पर आशापल्ली गाँव के निकट अपना मुकाम किया तथा शिकार खेलते-खेलते साभ्रमती तट पर जा पहुँचा— जहाँ विजन बनमें विवस्त्रा गुर्जर कुमारी निर्द्वन्द जल-क्रीड़ा कर रही थी। गुर्जर कुमारी के रूप यौवन को देखकर तरुण सुलतान विमोहित हो गया तथा उसका परिचय प्राप्त कर आशापल्ली गाँव में जाकर भिल्लराज से उसकी पुत्री की याचना की। भिल्ल राज ने पुत्री तो सुलतान को देना स्वीकार कर लिया—परन्तु मानवती स्वच्छन्द विचरण करने वाली गुर्जर कुमारी ने कहा—“मैं अपने पिता के गाँव को छोड़ कर पाटन नहीं जाऊँगी। तुम्हें रहना है तो यहीं मेरे साथ रहो।”

काम मुग्ध तरुण सुलतान अहमदशाह ने उस जंगली बिल्ली की शर्त स्वीकार कर ली। और तत्काल वहीं नगर बसाने की आज्ञा दे दी। इधर वह उस विजन बनस्थली में और साभ्रमती के विमल जल में तरुणी भील बाला गुर्जर सुन्दरी के साथ क्रीड़ा विलास करने लगा, इधर हजारों मजदूर कारीगर, जंगल साफ करने, भूमि समतल करने, सड़क चौड़ी बनाने—भवन-निर्माण करने में जुट गए। और देखते ही देखते साभ्रमती तटपर एक विशाल नगर प्रकट हो गया जिसका नाम सुलतान ने अपने नाम पर अहमदाबाद रखा। सुलतान ने उसी को अपनी राजधानी बनाया। आज भी आशापल्ली ग्राम के स्थान पर वहाँ आस्तोडिपो दर्वाजा है।

इसके बाद सुलतान महमूद बेगड़ा ने गुजरात को भव्य रूप दिया । उसने नदी का प्रवाह स्थानान्तरित करके किला बनवाया । और बड़ी-बड़ी इमारतें बनवाई । बेगड़ा को दो ही शौक थे । भोजन का और इमारत बनवाने का । संक्षेप में महमूद बेगड़ा के काल में अहमदाबाद की जाहोजलाली बहुत बढ़ गई । अहमदाबाद का किला चार सुलतानों के राज्यकाल में बनता गया । महमूद बेगड़ा के शासन काल में उसकी भीत की विस्तार छै मील के घेरे में थी । उसकी ऊँचाई पन्द्रह फीट थी । साधारण दीवारों की मोटाई पाँच फीट से कम न थी । प्रत्येक पचास कदम के अन्तर पर बड़े २ बुर्ज बने थे, जिनमें गोलाबारी के लिए छिद्र बनाए गए थे । उन दिनों किले के अठारह दर्वाजे थे जो इतने विशाल थे कि अम्बारी सहित हाथी उनसे निकल जाते थे । इन द्वारों पर लोहे की चादरों से मढ़े हुए मजबूत फाटक लगे थे । वे इतने मजबूत थे कि तोप के गोलों का भी उन पर असर नहीं होता था ।

२६

उस काल अहमदाबाद की आबादी नौ लाख थी। उसमें ३६० मुहल्ले सफ़ीलों के घेरे में थे। महमूद बेगड़ा बड़ा प्रतापी सुलतान था। उसके राज्य में सब प्रकार का अमन जाहोजलाली और व्यापार समृद्धि थी। राह बात सुरक्षित थी। बेगड़ा की सैन्य संतुष्ट थी। सुलतान ने यह फर्मान जारी किया था कि अमीर या लश्कर का कोई सिपाही जो लड़ाई में मर जाय तो उसकी जागीर व नौकरी उसके पुत्र को दे दी जाय। बेगड़ा के राज्य में प्रजा समृद्ध और सुखी थी। सुलतान का न्याय प्रसिद्ध था। वह दयालु और मौजी स्वभाव का आदमी था। जैसे उसे इमारत बनवाने का शौक था वैसे ही बाग-बगीचा लगाने का भी शौक था। सवारी में आते-जाते किसी गरीब के द्वार पर कोई नया पौदा समा देखकर—वह सवारी रोककर घर के स्वामी को बुलाकर उस भाड़ के सम्बन्ध में पूछ-ताछ करता। इससे अमीर-गरीब सभी को

मकान बनाने और वृक्ष रोपने का शौक उत्पन्न हो गया था। तथा अहमदाबाद जहाँ एक ओर विशाल और सुन्दर महलों, हवेलियों, अट्टालिकाओं से सुसज्जित हो गया था। वहाँ भाँति-भाँति के फल-फूल के वृक्षों से परिपूर्ण तथा हरा-भरा बगीचा-सा प्रतीत होता था। आज गुजरात में फल-फूल की जो इतनी बहुतायत है, यह बेगड़ाजी की सुरुचि का फल है।

नगर के बाहर दस मील के घेरे में सुलतान का फिरदौस नाम का बगीचा था जो गुजरात भर में अद्वितीय था। ऐसा ही एक बाग शाबान नाम से था।

ऐसा ही वैभव सम्पन्न नगर अहमदाबाद उस काल में था। सुलतान बेगड़ा बड़ा अद्भुत पुरुष था। वह प्रति दिन एक मन भोजन करता था। सुबह नमाज पढ़कर वह आधा सेर शहद, आधा सेर घी और डेढ़ सौ केलों का नाश्ता करता था। दोपहर को पुलाव, पुतंजन, कोरमा, कबाब गुदी, मुर्गी, समोसा, नान, शाक-भाजी सब मिलाकर आधा मन भोजन का भार हो जाता था। भोजन के बाद ५ सेर चिउड़ा तो वह स्वाद बदलने को खाता था। रात को फिर उसे भूख लगती थी, इसलिए वह दो थाल समोसा भरकर रखवा लेता था तथा खा-पीकर फिर सो जाता था।

२७

अहमदाबाद में जिस मकान में राजकुमारों ने डेरा डाला था—वह बहुत प्रशस्त था । उस हबेली के नीचे के भाग के चार खण्ड थे । एक खण्ड में तो मर्दानी बैठक, उठने-बैठने की व्यवस्था, तथा आगत अतिथि के सत्कार आदि की व्यवस्था थी । दूसरे खण्ड में सोने, आराम करने का प्रबन्ध था । तीसरे खण्ड में भोजन और चौथे में कोठार की व्यवस्था थी । ऊपर का भाग अन्तःपुर के उपयुक्त था । ऊपर भी एक बड़ा आँगन और एक रसोई घर था । दूसरी ओर दास-दासियों को रहने की कोठरियाँ थीं । पीछे के भाग में घोड़ा, हाथी, ऊँट आदि वाहनों की व्यवस्था थी । यह हबेली अहमदाबाद के एक सेठ ने इसी अभिप्राय से बनवाया था कि बाहर के माण्डलिक राजा-जागीरदार जो सुलतान के दरबार में आते ही रहते थे—उनके ठहरने के लिए उपयोगी हो । हबेली में जल-प्रकाश और वायु के आवागमन की उत्तम व्यवस्था थी ।

इस स्थान में आकर राजकुमारों ने अपने आराम और सुरक्षा का पूरा प्रबन्ध किया और छुन्न नाम से अपने को कोई सामन्त-पुत्र कह कर सबको परिचय दिया। सायबजी को भी समझा दिया कि किसी भी तरह उनकी भगिनी की तथा अन्य किसी को उनका परिचय न दिया जाय। अब वे अहमदाबाद में रहकर सुलतान के समक्ष आने और सहायता माँगने की प्रतीक्षा करने लगे।

परन्तु छच्छर बड़ा ही योग्य-दूरदर्शी और स्वामि-भक्त सेवक था। उसने राजकुमारों के अहमदाबाद में रहने का पूरा लाभ लेने का निर्णय किया। उस समय अहमदाबाद सब प्रकार के गुणियों से भरपूर नगर था। भाग्य से ही उन्हें यहाँ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उसने रणमल्ल से सलाह-मशिवरा करके सुयोग्य शिक्षक रख कर राजकुमारों को शस्त्र-शास्त्र की उत्तम शिक्षा दिलाने का प्रबन्ध कर दिया। राजकुमार भी बुद्धिमान थे। समय ने उन्हें अल्प वय ही में दूरदर्शी बना दिया था। वे जानते थे। उनके सिर पर युद्ध, राज्य शासन और शस्त्र संचालन का भार है, प्रजापालन भी उन्हें करना है। इसलिए वे मनोयोग से शास्त्रों और शस्त्र की शिक्षा प्राप्त करने लगे। उन दिनों अहमदाबाद में जैसलमेर का प्रसिद्ध भाटी देवचन्द्रमल्ल सुलतान की छत्रछाया में रहता था। दोनों राजकुमारों को छच्छर ने उक्त मल्लराज की सेवा में रख दिया। और उसने उन्हें सिखाकर शस्त्रास्त्रों के संचालन तथा मल्ल विद्या में पारंगत कर दिया।

छच्छर ने एक काम और बुद्धिमत्ता का किया। वह अद्भुत साधु का वेश बनाकर साभ्रमती तट पर खड्गधारेश्वर के मन्दिर में जा बैठा। उसने राजपुत्र को समझाया कि जामे रावण पर एक दृष्टि रखना आवश्यक है। वह अवश्य अपना नीच उद्देश्य पूर्ण करने यहाँ तक अपने दूतों को पहुँचावेगा। कच्छ से अहमदाबाद आने का एकमात्र यही मार्ग है।

इस प्रकार कच्छ से आने वाला कोई पुरुष उसकी दृष्टि में पड़े बिना नहीं रह सकता ।

खंगार जी ने छच्छुर की चाणक्य बुद्धि की सराहना की और गुप्त रूप से उससे अपना सम्बन्ध बनाए रखने का भी प्रबन्ध कर लिया ।

अब वे एक ओर नीति, युद्ध कला, मल्ल विद्या अन्य कला-कौशल और राजनीति की शिक्षा पा रहे थे, दूसरी ओर सुलतान से मिलने और सहायता की प्रार्थना करने का सुयोग ताक रहे थे ।

२८

जब रावण को इस बात की सूचना मिली कि उसके फैलाए हुए सब जालों को व्यर्थ करके दोनो राजकुमार सही-सलामत अहमदाबाद पहुँच गए तो वह बफरे हुए शेर की तरह गर्जने और गालियाँ बकने लगा। वह जानता था कि दोनों राजकुमारों का इस तरह बचकर निकल जाना उसके लिए भयानक विपत्ति का सूचक हो सकता है। वह यह भी जानता था कि सुलतान से जाम हम्मीर के सम्बन्ध हैं, और यदि सुलतान ने उन्हें सहायता दी तो फिर उसका निस्तार नहीं है, उसने अपने चुने हुए राजदां सरदारों और हत्यारे सेनापति चामुण्डाराय को बुलाकर एक गुप्त मन्त्रणा करी। मन्त्रणा में उसने स्पष्ट अपना हृदय खोल दिया। उसने कहा—“जाम हम्मीर मारा गया, इतने ही से मैं कच्छ का निर्भोक राजा नहीं हो सकता। जब तक दोनों राजकुमार जीवित हैं, तब तक मेरे सिर पर भय की नंगी तलवार लटक रही है। मैं सुख की नींद कैसे सो सकता हूँ, अब तो जैसे बने इन कुमारों को खत्म करना ही चाहिए।”

राजा के ऐसे वचन सुनकर सभा में सन्नाटा छा गया। उसके षड्यन्त्र और हत्या के साथियों के भी कलेजे कांप गये। जाम हम्मीर के बंध की अपकीर्ति अब तक देशव्यापी हो चुकी थी। और उसे सुन-सुन कर ये हत्यारे मन ही मन तिरस्कार और ग्लानि का अनुभव कर रहे थे, परन्तु मनुष्य धन का दास है। यह दासता उन्हें जड़ बनाए हुई थी। थोड़ी देर बाद चामुण्डाराय ने हाथ जोड़कर कहा—“अन्नदाता, जाम हम्मीर तो आप श्री की तलवार के भोग हो चुके। समूचे राज्य पर आप श्री की सत्ता अखण्ड चल रही है। हम्मीर की रानियाँ सती हो चुकी। उनके लड़के राज्य-भ्रष्ट हो दर-दर मारे-मारे फिर रहे हैं। वे जीवित हैं भी या मर गए इसका भी क्या ठिकाना। जो लोग कहते हैं कि वे अहमदाबाद में हैं, इसका भी क्या प्रमाण है, मुझे तो सूचना मिली है कि सुलतान के दरबार में राजपुत्र पहुँचे ही नहीं हैं। फिर यदि वे जीवित हों भी—तो आपका क्या बिगाड़ सकते हैं। कच्छ देश की राजसत्ता, कोष, सेना, सभी कुछ आपके हाथ में है। अनेक राजा आप श्री के मित्र हैं। और दिन-प्रति-दिन आपका अधिकार इस भूमि पर दृढ़ होता जा रहा है। इन सब कारणों पर विचार करके दास तो यही समझता है कि हमें अब उसकी कुछ भी चिन्ता नहीं करनी चाहिए।”

पर रावण को ये सब बातें नहीं रुचीं। उसने कहा—“बैरी और आग को कभी तुच्छ न समझना चाहिए। मुझे तो लोगों ने गुजरात से लौट कर कहा है कि दोनो राजकुमार अहमदाबाद में ही हैं। यदि वे बेगड़ा की सहायता लेकर हम पर चढ़ाई करें तो हमारा किसी भाँति निस्तार नहीं है। इसलिए यह काँटा अपने मार्ग से निकालना आवश्यक है। इसलिए तुम ४-५ विश्वासी कर्मचारियों को लेकर गुजरात जाओ। और जैसे बने इन साँप के बच्चों को मार डालो। उनके मरने ही से हमारा निस्तार है। इस काम में खर्च की चिन्ता मत करो। जो भी खर्च दरकार हो खजाने से ले लो।” रावण के ऐसे विचार सुनकर लुहाणा शिवजी

ने कहा—“महाराजाधिराज, आपकी आज्ञा हो तो आपका यह एक-निष्ठ सेवक भी चामुण्डारायजी के साथ अहमदाबाद जाय और आपके इस कष्ट के निवारण में सहायक हो आपका कृपा भाजन बने ।”

रावण ने कहा—“भले ही तुम भी जाओ और जैसे बने काम सिद्ध करो । काम सिद्ध होने पर मैं आपकी जागीर दूनी कर दूँगा । जाओ, राजभक्ति का प्रदर्शन करो ।”

शिवजी ने कहा—“आप श्री की जो मेरे ऊपर इतनी कृपा है, यही मेरा सबसे बड़ा पारितोषिक है । मुझे अन्य किसी पारितोषिक की आवश्यकता नहीं है ।”

इतनी बात-चीत के बाद यह गुप्त मन्त्रणा भंग हुई । और दूसरे दिन भोर ही में ये छै पुरुष, घोड़ों पर सवार हो छै सेवकों सहित कच्छ की नवीन राजधानी से अहमदाबाद की ओर चले ।

२६

अहमदाबाद में अकस्मात् ही एक भीति की भावना फैल गई । सावरमती के कल्लार में कोई भयंकर नरघाती शेर आ गया था, उसने कई ग्राम के अनेक स्त्री-पुरुषों तथा पशुओं का शिकार किया था । गाँव वासी उसके आतंक से त्राहि-त्राहि करने लगे । यह शेर बड़ा चालाक और भयंकर था । वह दिन-दहाड़े घरों और खेतों से स्त्री-पुरुषों को पकड़ ले जाता और मार डालता था । सुलतान ने अनेक शिकारी उसे मार डालने को भेजे परन्तु उनमें से अनेकों को शेर ने चीरफाड़ डाला । अन्त में क्रुद्ध होकर सुलतान मुहम्मद बेगड़ा ने स्वयं ही सिंह के शिकार को जाने का निश्चय किया । वह हाथी पर सवार हो शिकारियों और सैनिकों के साथ गहन बन में पहुँचा । बन लताकुञ्जों से आच्छादित था । आगे बढ़ने की राह न थी । सुलतान को अपने बाहुबल पर बहुत भरोसा था । वह हाथी से उतर कर घोड़े पर सवार हो सिंह की टोह में उस

गुफा की ओर चला जहाँ सिंह की उपस्थिति शिकारियों ने बताई थी । उसके साथ ही कुछ चुने हुए शिकारी थे । उन्हीं में छद्म वेशी खंगार और सायबजी भी वीर वेश में थे । उन्होंने आज अपनी वीरता का प्रदर्शन कर सुलतान को खुश करने का चुपचाप निश्चय कर लिया था ।

अकस्मात् ही सिंह एक भयानक गर्जना करके सुलतान पर दूट पड़ा । सुलतान का घोड़ा भड़क कर उछला । असावधान सुलतान भूमि में गिर गया । घोड़ा भाग खड़ा हुआ और सिंह ने सुलतान को दबोच लिया । सुलतान के प्राण संकट में आ फँसे ।

इसी समय खंगारजी ने भाले का एक भरपूर हाथ सिंह की पसलियों पर दिया । भाला सिंह की पसलियों में घुस गया । सिंह दहाड़ मारकर उछला और सुलतान को छोड़ खंगार जी पर दूट पड़ा, खंगार जी तथा सिंह में भीषण मल्ल युद्ध होने लगा । इसी अवसर पर सायबजी ने अपनी समूची तलवार सिंह के पेट में मूठ तक घुसेड़ दी । सिंह उछला और भूमि पर गिर कर छटपटाने और गुरीने लगा । तभी अवसर पाकर खंगारजी ने अपना बर्छा उसके मुँह में घुसेड़ दिया और तलवार के तीन-चार ऐसे भरपूर हाथ मारे की शेर का काम तमाम हो गया ।

पर शेर के आक्रमण से खंगारजी भी बुरी तरह घायल हो गए थे । वे लोहू-लुहान हो बेहोश होकर जमीन पर गिर गए ।

अपने प्राण-रक्षक को इस प्रकार भूमि पर गिरा देख सुलतान ने लपक कर उन्हें अपनी बलिष्ठ बाहुओं में डाल लिया और अपने हाथी की अम्बारी में रखकर स्वयं आकर उपचार किया । उनके होश में आने पर प्राण-रक्षक कहकर उनका सम्मान किया । और दोनों कुमारों के कन्धों पर हाथ रखकर कहा—

“वीर कुमारों, तुम कम उम्र और नाजूक बदन किमी सरदार के नौनिहाल मालूम होते हो । यद्यपि मैं तुम्हें नहीं जानता—पर आज तुमने

गजब की जवाँमर्दी दिखाई है। और न सिर्फ मेरी जान बचाई है बल्कि अहमदाबाद के रहने वालों और मेरी प्रजा को भी भय-मुक्त किया है। तुम अपना परिचय दो। सुलतान बेगड़ा तुम्हारी वीरता की कद्र करेगा। कल मैं खुले दरबार में तुम्हारा सम्मान करूँगा। यह मुद्रिका लो—और कल दरबार में हाजिर आओ! ताकि दुनिया अपने सुलतान के प्राण-रक्षक को देखे।”

खंगारजी ने चुपचाप मुद्रिका ले ली और अभिवादन कर पीछे हट गए। सुलतान ने हुक्म दिया इन बहादुर कुँवरों को हमारे हाथी पर लेजाकर इनके घर पहुँचा आओ और शाही हकीम फौरन इनके जख्मों की मरहम-पट्टी करे। इतना कहकर एक घोड़ा पर चढ़ कर सुलतान वहाँ से बिदा हुआ।

३०

सिंह के शिकार में सुलतान का बाल-बाल बच जाने और दोनों परदेशी क्षत्रिय कुमारों द्वारा वीरत्व प्रदर्शित करने की अफवाह अहमदाबाद में घर-घर होने लगी। सुलतान ने भी अपने अन्तःपुर में जाकर बेगम कमा बाई को सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाकर दोनों क्षत्रिय पुत्रों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और कहा—“कल हम उन बहादुर राजपूत बच्चों को भरे दरबार में उनकी वीरता का पूरा पुरस्कार देंगे।”

बेगम कमा बाई ने पूछा—“आला हजरत, वे दोनों क्षत्रिय कुमार कौन हैं। उन्हें हुजूर, हमारे रूबरू भी हाजिर कीजिए, जिससे हमारे सौभाग्य की रक्षा करने वालों को हम भी इनाम बखशाएँ।”

“भले, बेगम हम तुम्हारी इच्छा पूरी करेंगे।” जब ये बातें हो रही थीं, अलैयाजी चुपचाप खड़े सुनकर मुस्कुरा रहे थे। अब उन्होंने आगे बढ़कर सुलतान को सलाम की और कहा—“खुदाबन्द, जिन दो राजपूत

युवकों ने आज ऐसी जवाँमर्दी व बहादुरी दिखाई तथा नामदार सुलतान के दुश्मनों की जान बचाई है वे हमारे भाई, जाम हम्मीर के प्रतापी पुत्र ग्वंगारजी और सायबजी हैं ।”

यह सुनते ही बेगम कमा बाई उत्तेजना से उठकर खड़ी हो गईं । उसने कहा—“क्या तुम सच कह रहे हो । तब तो उनके इस काम से हमारा मुँह भी उज्ज्वल हो गया ।”

सुलतान ने भी आश्चर्य चकित हो कर कहा—“लेकिन जाम हम्मीर के राजकुमार यहाँ कहाँ ?”

“हुजूर, अन्नदाता बे-अदबी माफ हो । राजकुमार दो वर्षों से अहमदाबाद में रह रहे हैं ।”

“क्या तुम्हें या बेगम को यह बात मालूम थी ?”

“मुझे मालूम थी खुदावन्द, मगर मैंने बहिन से यह राज पोशीदा रखा ।”

“क्या वजह है कि तुमने ऐसा अहम मामला हमसे और बेगम स पोशीदा रखा ।”

“खुदावन्द, जब दोनों राजकुमार अहमदाबाद में आए तो वे विपत्तिग्रस्त थे । हुजूर को मालूम हो चुका है कि जाम रावण ने महाराजाधिराज जाम हम्मीर का विश्वासघात से बंध करा डाला था । निस्संदेह वे हुजूर की मदद लेने ही हुजूर की सेवा में आए थे । पर वे ऐसी दीन-हीन अवस्था में सुलतान के सामने आना नहीं चाहते थे । वे चाहते थे कि कोई खास अवसर ऐसा आए कि वे हुजूर सुलतान नामदार के प्रति जानिसारी का सुबूत दे सकें, और हुजूर उन पर प्रसन्न हो तो वे हुजूर नामदार के रूबरू हाजिर आकर सलाम करें । उन्होंने मुझे भी कसम देकर अपना आना गुप्त रखने को मजबूर कर दिया था, इसी से मैंने हुजूर नामदार से तथा बहिन से उनकी चर्चा न की । तकसीर माफ हो ।”

“खंगारजी को अक्लमंदी दानिशमंदी और दूरदेशी वैसी ही काबिले-तारीफ है जैसी उनकी वह जवांमर्दी जिसमें उन्होंने कल हमारी जान बचाकर अपनी जानिसारी का सबूत दे दिया। बस, अब हमारा काम है कि—हम इन अपने प्यारे रिश्तेदार बहादुर राजकुमारों के लिए अपना फर्ज पूरा करें। लेकिन कुमार, क्या तुम इन बहादुर राजकुमारों के यहाँ आने के पूरे हालात से वाकिफ हो?”

“जी हाँ हुजूर, उन पर जो विपत्ति के पहाड़ टूटे वैसी तो किसी दुश्मन पर भी न टूटे।” इतना कहकर जाम रावण का विश्वासघात, जाम हम्मीर की निर्मम हत्या, छच्छरबूटा की स्वामि-भक्ति और मैया मियाना की कुर्बानी तथा राजकुमारों के साहस का सब किस्सा आश्चर्यान्त सुना दिया।

सुनकर सुलतान की आँखों से आँसुओं की धार बह चली, उसके होठों से निकला—“आफरी, आफरीं!!” बेगम कमाबाई भी रोते-रोते सुलतान के कदमों पर गिर गईं। और कहा—“मेरे मालिक, अब तो मैं अपने वीर भाइयों को बिना देखे एक पल भर भी नहीं रह सकती। क्या कर अभी इसी क्षण उन्हें यहाँ हाजिर आने का हुक्म दीजिए।”

“बेगम इसमें हमारे हुक्म की क्या जरूरत है। प्रथम तो वे तुम्हारे भाई हैं, दूसरे आज उन्होंने अपने उपकार के भार से मुझे दबा दिया है, उन्हें देखने के लिए मेरी आँखें तरस रही हैं। मैं अहसान फरामोश नहीं हूँ—तुम अभी बखूबी अपने विरादरों को यहाँ बुलाओ।”

बेगम कमा बाई ने अलैयाजी की ओर देखा और उन्होंने तुरन्त एक गुलामखास को दोनों राजकुमारों को बुला लाने के लिए भेज दिया।

एक प्रहर के अन्तर से दोनों कुमार छोट्टियों पर आ पहुँचे। एक बाँदी ने उनके आने की सूचना सुलतान को दी। सुलतान के संकेत से अलैयाजी ने आगे बढ़कर कुमारों की अभ्यर्थना की और उन्हें ले आकर सुलतान के समक्ष हाजिर किया।

दोनों राजकुमारों ने राज मर्यादा के अनुसार सुलतान को सलाम किया और फिर बहिन को प्रणाम किया ।

कमा बाई के नेत्रों से आँसुओं की जलधार बह चली—उसने दोनों भाइयों की बलैया लेते हुए हिचकियाँ भरते-भरते कहा—“भाई, हम सब अब बिना माँ-बाप के अनाथ हो गए । हाय-हाय, तुम्हारी यह अभागिनी बहिन, माता-पिता के अंतिम दर्शनों से भी वंचित रह गई । अब कौन मुझे ‘लाइली कमा’ कहकर पुकारेगा ? माता बिना कौन मुझे ‘मेरी कमूडी’ कहेगा ? हाय ! दुश्मन के भी माता-पिता का निधन न हो । विधाता ने इस दारुण शोक को देखना हमारे भाग्य में लिखा था ।” इतना कहकर और पल्ले से मुँह ढाँपकर वह सिसकियाँ लेने लगी ।

भाई-बहिन का यह कण्ठ मिलाप देखकर सुलतान का भी दिल भर आया । खंगारजी—सायबजी, अलैयाजी की आँखों से भी चौधारा आँसू बहने लगे ।

सुलतान ने दीर्घ-निश्वास खींचकर कहा—“ऐसा लगता है कि जाम हम्मीर का आज ही स्वर्गवास हुआ है । और आज ही उनकी रानी तथा खामत ने चित्तारोहण किया है । और हम अपनी आँखों से यह दर्दनाक हादसा देख रहे हैं ।

इतना कह कर सुलतान चुप रहा । कुछ देर सन्नाटा रहा । फिर खंगारजी ने कहा—

“बहिन अब अधिक विलाप करने से क्या लाभ है । जो भाग्य में बदा था वही हुआ । विधि के विधान में किसी का क्या चारा । अब तो इसका प्रतीकार यही हो सकता है कि हम पिता के हत्यारे जाम रावण से पूरा प्रतिशोध लें और अपना कच्छ का राज्य वापस हस्तगत करें । इससे हमारे माता पिता की स्वर्गस्थ आत्मा संतुष्ट होकर स्वर्ग से हमपर आशीर्वाद की वर्षा करेगी ।”

कमा बाई ने कहा—“भाई, तुम्हें जो भगवान ने इतने भयानक शत्रु के पंजे से बचाकर जीवित यहाँ पहुँचा दिया है तो ईश्वर अब तुम्हारी सब शुभ इच्छाओं की पूर्ति करेगा। पर भैया दो वर्ष से तुम यहाँ रह रहे हो और अपनी इस अभागिनी बहिन को एक बार भी देखने नहीं आए। तुमने ऐसा पत्थर का कलेजा कर लिया।”

सुलतान ने भी शोक पूर्ण स्वर में कहा—“तुम हमारे प्रिय सम्बन्धी अहमदाबाद में इतने दिन से गुप्त रहे, हमारे पास आने में संकोच किया—यह तुमने बड़ी चूक की। क्या तुम समझते थे कि सुलतान इतना इन्सानियत से गिरा हुआ है कि तुम्हारा सत्कार सहायता न करता?”

बहिन और सुलतान की बात सुनकर खंगारजी ने मन्द स्वर से नीची नजर करके कहा—“हजरत सलामत, हमारी कृपालु बहिन ने जो उलाहना दिया और आपने जो कुछ फर्माया—वाजिबी है। आपकी कृपादृष्टि ऐसी ही है। पर उस समय हमारे मन में यही संकोच हुआ कि उस विपत्ति के समय में यदि आपने हमारा योग्य सत्कार न किया तो फिर आपसे सहायता प्राप्त करने की हमारी सारी आशा ही लुप्त हो जाएगी। इसी से हम किसी उपयुक्त समय की प्रतीक्षा में रहे। ईश्वर को धन्यवाद है। आज वह शुभ समय भी आ गया और आप नामदार की कृपादृष्टि से हम निहाल हो गए।”

“हम तुमसे मिलकर बहुत खुश हुए हैं। अजीज राजकुमारों, तुम्हारी बहादुरी और बुद्धिमानी तथा मर्यादा का विचार अद्वितीय है। अब कहो—“तुम मावदौलत से क्या चाहते हो?” खंगारजी ने कहा—“खुदा-वन्द, जिससे हम दुष्ट रावण से अपने पिता के अपघात का बदला ले सकें और अपने कच्छ का राज्य पीछे फेर सकें—ऐसी ही सहायता आप हमें प्रदान करें—बस यही हमारी एकमात्र आरजू है। और हम यह सहायता इस शर्त पर माँगते हैं कि ज्योंही हमें हमारा राज्य वापस मिल जायगा, तभी इस सम्बन्ध में आप नामदार का जो खर्चा हुआ होगा—

वह हम ब्याज सहित आपको लौटा देंगे तथा जो योद्धा हमारे इस युद्ध में मरण शरण होंगे, उनके कुटुम्ब को आप नामदार की आज्ञा के अनुसार हर्जाना और वार्षिक वेतन हम देते रहेंगे ।”

“ठीक है । तो अभी तुम्हें सेना और धन की आवश्यकता है । कल के दर्बार में हम तुम्हारा जो सत्कार करेंगे । उसी समय इस मसले पर भी गौर किया जायगा ।”

“इस उपकार के लिए हमारा जाड़ीजा वंश सदा सुलतान सल्तनत का कृतज्ञ रहेगा ।”

“मैं भी तुम्हारे उपकार भार से कभी उन्मृण न होऊँगा मेरे प्यारे राजकुमार ।”

इतना कह कर सुलतान ने उठकर राजकुमारों को हृदय से लगाया ।

“जीओ मेरे वीर, कहकर कमाबाई ने उनकी बलैया ली और बिदा किया ।”

३१

दरबार बहुत धूमधाम व शानोशौकत से सजाया गया । सब नगर के नागरिक सेठ, साहुकार, गिरासिए जागीरदार और सब कर्मचारी दरबार में उपस्थित हुए थे । उल्मा और पण्डित अपने-अपने स्थान पर आ बैठे । सुलतान शेर के शिकार में बाल-बाल बचे थे इसलिए सुलतान की सलामती की बधाई देने बहुत नामांकित भाठ-भांड, तवायफ और कवि भी दरबार में हाजिर थे । सुलतान की प्राण-रक्षा करने वाले क्षत्रिय कुमारों को देखने और उन्हें नामदार सुलतान क्या इनाम बख्शीश देते हैं—यह भी देखने के लिए प्रजा और दरबारी जन बहुत उत्सुक थे ।

सुलतान की मस्नद के पास ही दोनों ओर दो दो और मस्नदें लगी थी । नौबतखाने में शहनाई और नौबत के नगारे बज रहे थे ।

सुलतान तख्त पर सवार होकर पधारे और सब सभा सदस्यों ने खड़े होकर जयजयकार किया । सुलतान के मस्नद पर बैठते ही सब लोगों ने

जमीन तक सिर नवाकर सुलतान का अभिवादन किया। भट्ट चारणों ने विरद बखाननी आरम्भ की।

इसी समय द्वारपाल ने दोनों राजपुत्रों के आने की सूचना दी। खंगारजी और सायबजी राजकीय वेश धारण कर दरबार में आये तो सुलतान ने मस्तद से उठकर, और आगे बढ़कर उनका स्वागत किया। सब दरबारी उठ खड़े हो गए। सुलतान ने उन्हें अपने दाहिने बाएँ मस्तद पर बैठाया। भाट चारणों की वरद के बाद नृत्य संगीत चला। फिर सुलतान ने गम्भीर वाणी से कहा—

“वजीरे आजम, जंगबहादुर सिपहसालार, सरदारो, रईसों, साहुकारों और मद्गृहस्थों को विदित हो कि कल जिन दोनों राजपुत्रों ने हमारी प्राण रक्षा की है—वे दोनों राजकुमार यहाँ उपस्थित हैं। मुझे यह प्रकट करते हर्ष होता है कि ये दोनों राजकुमार हमारे सम्बन्धी कच्छ के जन्नत नशीन महाराज जाम हम्मीगजी के कुँवर खंगारजी व सायब जी हैं। महाराज जाम हम्मीर को जाम रावण ने दगा से गरवा डाला था—और ये दोनों राजपुत्र हमारी सरकार से मदद लेने अहमदाबाद आए थे और दो बरस से नाम छुपाकर रह रहे थे। परन्तु हमें कल ही इनका पता लगा जब कि इन्होंने बड़ी वीरता से अपनी जान जोखिम में डालकर हमारी जान बचाई, जिसका हम अहसान मानते हैं। इसके लिए इनका जितना सत्कार किया जाय थोड़ा है।” इतना कहकर उन्होंने संकेत किया और वजीरे आजम ने खिदमतगार के हाथों एक सोने का थाल लाकर सुलतान के सामने रखा। थाल में जड़ाऊ बहुमूल्य पोशाक, दो जड़ाऊ तलवार, दो हारों के हार कलगी और दो कटारें थी। सुलतान ने अपने हाथों वह उपहार खंगारजी को सौंपते हुए कहा—“वीर राजपुत्र खंगारजी व सायबजी, यह हमारी तलवार, कटार तथा सिरोभाव आप मंजूर फर्माइए। हमारी ख्वाहिश है कि आप जब कच्छ के सिंहासन पर विराजमान हों तो यही पोशाक और तलवार धारण करें। आज के

दरबार की यादगार में हम आपको 'राव' का खिताब भी अदा फर्माते हैं। और हमारी ख्वाहिश है कि आप जब कच्छ के गद्दी नशीन हों तो जाम के स्थान पर कच्छ के राव कहाँ।”

कुछ रुककर उन्होंने अपने सिपहसालार को लक्ष्य करके कहा—“हम अपने बहादुर सिपहसालार जङ्ग बहादुर को हुक्म देते हैं कि तुम आज से चार दिन के भीतर-भीतर सब तैयारियाँ करके बारह हजार सवारों की फौज लेकर राजकुमारों की रकाब के साथ रहो। और जालिम जाम रावण को उसकी करनी का मजा चखाओ। उसका सिर काटकर नामदार राजकुमार के कदमों में हाजिर करो। कच्छ की गद्दी पर राजकुमार को बैठने के बाद उनसे हुक्म लेकर लौटो तथा इस मुहिम में हर तरह उन्हीं के ताबेदार रहो। हमें उम्मीद है कि इस लड़ाई को तुम फतह करोगे—और सुलतान बेगड़ा की इज्जत में दाग न लगने दोगे।”

कुछ रुककर सुलतान ने वजीरे आजम की ओर मुँह करके कहा—“वजीरे आजम को हुक्म है कि वह एक लाख सोने की मुहर खजाने से कुमार को दे दें और खजांची को हुक्म दे दें कि इसके बाद भी उनका रुका लेकर जब भी कोई आदमी रुपया लेने आए तो बिना ही हमसे हुक्म लिए तुरन्त वह रकम उसे दे दी जाय।

यह रकम खातों में कच्छ राज्य के नाम उधार लिख दी जाय। लेकिन खातों में यह भी दर्ज कर दिया जाय कि यह रकम जब कच्छ राज्य अपनी ही स्वेच्छा से वापस दे तभी ली जाय। उनसे या उनके वंशजों से इसका कभी तकाजा-तलबी न की जाय।

‘राव’ की पदवी का कच्छ के राजा स्वतन्त्र सत्ताधीश होते हुए सदैव उपभोग करेंगे। भविष्य में अहमदाबाद का कोई सुनतान कच्छ पर चढ़ाई करके उसे जेर न करेगा। और कच्छ के ‘राव’ सदा हमारी सरकार के मित्र बने रहेंगे। यह सब बाकायदा लिखकर हमारे दस्तखती दस्तावेज दफ्तर में दाखिल कर लीजिए।”

सुलतान की इतनी उदारता देख खंगारजी आनन्द गद्गद हो गए । उन्होंने खड़े होकर कहा—“मुझ तुच्छ की एक साधारण सेवा को जो महत्व नामदार महाप्रतापी सुलतान ने दिया है और हम पर आशा से अधिक कृपादृष्टि कर, हमें जो अमूल्य सहायता प्रदान की है, उसके लिए हमारा जाड़ोजा वंश सदैव आपका कृतज्ञ रहेगा । सुलतान के वंशधर जो कच्छ के राव के साथ मैत्री सम्बन्ध की आन रख—कच्छ की स्वतन्त्रता में बाधा न देंगे तो कच्छ का ‘राव’ भी अहमदाबाद के सुलतान का सदा मित्र रहेगा और आपत्ति काल में अग्रभाग में रहकर उसे सहायता देगा । राज्य प्राप्ति के बाद मैं इस सन्धि-प्रसङ्ग को व्यवस्थित रूप दूँगा । अन्त में खुदाबन्द सुलतान को हार्दिक धन्यवाद देकर अपनी कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना फर्ज समझता हूँ ।

इतना कहकर खंगारजी बैठ गए । दरबार आमीन-आमीन की ध्वनि से गूँज उठा । अब भाट चारणों ने बढ़-बढ़कर कच्छ के राव और सुलतान की प्रशंसा में कवित्त पढ़े ।

आलिमों ने आशीर्वचन दिए—दुआएँ कीं । वाराङ्गनाओं ने बधाइयाँ गाईं । तब सबको इनाम-इकराम देकर दरबार बर्खास्त हुआ ।

सुलतान दोनों राजकुमारों को लेकर अन्तःपुर में गया, जहाँ उनके लिए ब्राह्मण रसोइया को बुलाकर उनकी ज्योनार की गई । पीछे इत्र-पान देकर उन्हें विदा किया गया ।

३२

यथा समय शुभ सुहूर्त देख दोनो राजकुमार सेना और खजाना संग ले दल-बल सहित अहमदाबाद से रवाना हुए । रणमल और रणमल्ल का भतीजा ये दोनों ताबड़-तोड़ यह शुभ समाचार शीघ्रातिशीघ्र जालिम सिंह को पहुँचाने आगे बढ़े । छुछर ने वीर वेश धारण कर कुमार की अंगरक्षक सेना का नेतृत्व अपने हाथ में लिया । नामदार सुलतान हाथी पर सवार होकर सरखेज तक राजकुमारों को पहुँचाने पाँचसौ अंगरक्षक सैनिकों सहित साथ चला । दोनों राजकुमार सोने की अम्बारी में दिग्गज हाथी पर बैठे । उनके दोनों दिशा में रुपया और मुहरों की वर्षा होती गई । दीन-दुखी निहाल हो गए । जब सरखेज की सीमा आई तो सुलतान बेगड़ा ने दोनों राजकुमारों से आलिङ्गन कर उन्हें बिदा किया तथा रहस्य में उनसे कहा—अजीज खंगार जी, मैंने मोरवी के नवाब खाँ गौरी पर मोरवी तुम्हें सौंप देने का परवाना लिखकर सेनापति को दे दिया है ।

नवाब हमारे परवाने की आन मान राजी-खुशी से मोरवी तुम्हारे तावे कर दे तो ठीक है, पर यदि खान राजी-खुशी से मोरवी तुम्हारे सुपुर्द न करे तो युद्ध करके मोरवी सर करने का हुक्म मैंने सेनापति को दे दिया है। क्योंकि मोरवी पर तुम्हारा अधिकार होना तुम्हारे हित में रहेगा। मोरवी एक ऐसा स्थान है कि वहाँ तुम अपनी स्थायी छावनी बनाकर जाम रावण पर आक्रमण करोगे तो उसका बल शीघ्र खण्ड-खण्ड हो जायगा। कच्छ की सल्तनत बहुत जल्द थोड़े ही प्रयास से और बहुत कम हानि होकर तुम्हारे हाथ आ जायगी। मोरवी में स्थिर होकर जैसा ठीक समझना वही करना। आवश्यकता होने पर हमारे सेनापति से सलाह लेना। वह फनेजंग का माहिर सिपाही और रियासती मामलों का अच्छा जानकार है। बस, खुदाहाफिज, इतना कहकर सुलतान ने दोनों राजकुमारों को विदा किया। राजकुमार एक बार और सुलतान को आन्तरिक धन्यवाद देकर और कृतज्ञता प्रकट कर आगे बढ़े। सुलतान अपने अंगरक्षकों सहित पीछे लौटा।

दस गाँव की मंजिल पूरी करके खंगारजी की सेना ने मुकाम किया। यहाँ से एक और समाचार तथा अपनी पत्नियों के नाम प्रेम-पत्र दोनों राजकुमारों ने बहुत से उपहारों के साथ भेजे। पहरे चौकी का सब प्रबन्ध कर और खान-पान से निवृत्त हो दोनों राजकुमार अपने तम्बू में बैठ भूत, भविष्य पर विचार करने और नई योजनाओं पर सलाह मशविरा करने लगे।

इसी समय एक प्रहरी ने आकर सूचना दी कि लुहाणा शिवजी नामक कोई कच्छ का राजकर्मचारी अत्यावश्यक कार्य के निमित्त अभी इसी क्षण श्रीमानों से भेंट करना चाहता है। शिवजी लुहाणा का अनुग्रह छुछर और राजकुमार भूले न थे। राजकुमार की आज्ञा से छुछर आगे बढ़कर लुहाणा शिवजी को खंगारजी के समक्ष ले आया। शिवजी ने राव खंगार को जुहार की और तब इस प्रकार बातचीत हुई।

“कच्छ के धनी अन्नदाता को कदाचित् स्मरण होगा कि जब मियाँ-मियाना के यहाँ श्रीमानों पर घोर संकट काल आया था तब दास से यत्किंचित सेवा बन पड़ी थी ।”

“आपने हमारे प्राणों की रक्षा की थी । वह बात हम भूले नहीं हैं । और आप यदि अब उसी उपकार का पुरस्कार लेने आए हैं तो हम अपनी प्रसन्नता और इच्छानुसार तो नहीं—यत्किंचित आंशिक पुरस्कार आपको भेंट करते हैं ।”

“अन्नदाता मैं तो परंपरा से महाराज का नमकहलाल सेवक हूँ । फिर पुरस्कार की बात ही क्या । फिर इस समय तो मैं राजसेवा के विचार से सेवा में उपस्थित हुआ हूँ ।”

“आप कैसी राज सेवा करना चाहते हैं ।”

“महाराज को विदित हो—कि जाम रावण ने आप श्रीमानों का छुलबल से आघात करने के लिए हत्यारे भेजे हैं । वे यहाँ आ पहुँचे हैं । और आपकी घात में हैं ।”

“वे कौन हैं ?”

“वही हत्यारा चामुण्डाराय है । उसके साथ पाँच जन और हैं । जो उसी के समान दया माया रहित जमदूत हैं । जब रावण ने इन्हें महाराज श्री के अनिष्ट करने के इरादे से इधर खाना किया तो मैंने इच्छा पूर्वक उनके साथ रहने की आज्ञा ले ली । और मार्ग में उन्हें अमल-पानी और विलास आनन्द में मग्न कर विलम्ब कराता चला गया । हम परसों अहमदाबाद पहुँचे । और तभी हमें दरबार का सब हाल ज्ञात हुआ । तथा आपके लश्कर के साथ ही साथ लौट रहे हैं ।”

“वे हत्यारे अब कहाँ हैं ।”

“यहाँ से आधा कोस के अन्तर पर एक ग्राम में छिपे बैठे हैं ।”

“क्या आपका यहाँ आना उनपर प्रकट है ?

“जी हाँ, मैं उन्हीं के परामर्श से सब मीके घाट देखने आया हूँ, कि छावनी में घुसकर आपका आघात करें।”

“तो अब आपकी क्या योजना है?”

“महाराज, मेरी योजना तो यह है कि मैं उन्हें सब भाँति आश्वासन देकर यहाँ तक ले आऊँ। और आप उन हत्यारों को उनकी करनी का फल चखावें।”

“यह उत्तम है। किन्तु कछु का क्या हाल-चाल है?”

“महाराज, आज कछु तो विधवाओं और पीड़ितों के विलाप से भरी भूमि हो गई है। लूट-बलात्कार, हत्या-चोरी, डकैती तो अब एक साधारण बात हो गई है। कछु की प्रजा तो अब इसी आशा में है कि कब श्रीमानों के वरदहस्त से कछु का उद्धार हो।”

शिवजी लुहाणा की बात सुन कर कुछ देर राजपुत्र चुप रहे फिर छुछुर से और सायबजी से सलाह की। तब खंगारजी का रुख देख छुछुर ने कहा—“शिवजी भाई, महाराज श्री के प्रति आपत्काल में तुम्हारी सदा सद्भावना रही। इसके लिए महाराज राव खंगारजी आप के कृतज्ञ रहेंगे। आज भी आप एक संकट को टालने में कृत-संकल्प हैं। धन्य है आपकी राजनिष्ठा। अब आप जाकर उन दुष्टों को भरमा कर यहाँ ले आइए। जिससे उनके दुष्कृत्यों का दण्ड उन्हें यहीं मिल जाय।

शिवजी जाकर हत्यारों को संग ले आया और सैनिकों ने उन्हें पकड़ कर बाँध लिया तथा खंगारजी की आज्ञा से तुरन्त उनके सिर काट लिए गए। उनके शव धरती में गाड़ दिए गए। शिवजी को खंगारजी के अंगरक्षक दल का अधिपति बना दिया गया।

इसके बाद एक प्रहर रात रहते यह कटक आगे को बढ़ा।

३३

जालिमसिंह ने अपने सब भायातों और सम्बन्धियां साहत दोनों दामादों का अपने गाँव के सिमाने पर सत्कार किया। आदर मान से घर लाए। सेना की छावनी गाँव के बाहर पड़ी। बड़ी भारी ज्योनार हुई।

रात्रि को नव-दम्पति का सुखद मिलन हुआ, मान-अभिमान, मान-मनौवल और फिर मिलन, रस पूरण सब कुछ हुआ। आनन्दाश्रु के साथ सुखद मिलन की रात्रि व्यतीत हुई।

भोर में सब सरदारों का ब्योढ़ी में जमाव हुआ। कुसुमल-अमल आरीगा गया। हुक्का का दौर चला। गढ़वी ने ३-४ प्याला कुसुमल चढ़ा कर विरद वखानी। खंगारजी ने उसे सिरोभाव और ५ हजार कोरी देकर सत्कृत किया। वह दिन आनन्द नाच-रंग में व्यतीत हुआ।

आगे की बातों पर विचार हुआ। जालिमसिंह ने एक हजार भायातों की सैन्य लेकर राव खंगार की रकाब के साथ चलने की इच्छा प्रकट की।

दूसरे दिन सवारी गाँव से चली। आगे-आगे डंका बज रहा था। पीछे जालिमसिंह के एक हजार क्षत्रिय घुड़सवार हाथों में नंगी तलवार लिए, उनके पीछे रानियों के डोले, दासियों बाँदियों के झुरमुट में उनके पीछे दोनों राजकुमार घोड़ों पर सवार पाँचो हथियार बाँधे। और उनके पीछे सुलतानी बारह हजार की विजयिनी सेना। गाँव, जनपद नगर जिवर से सवारी गुजरी लोग देखते रह गए। भाँति-भाँति की चर्चा लोग चलाते। राजपुत्रों को देख कर मन में हर्षति थे।

इस प्रकार कूच पर कूच करते हुए राजपुत्रों की यह विजय बाहिनी मोरवी की सीमा पर आ लगी। तथा मोरवी से आधा मील इस ओर सेना ने पड़ाव डाला।

दूत के हाथों नवाब खान के पास सुलतान का परवाना भेजा गया। पर नवाब खान ने मोरवी दखल नहीं करने दिया। निरुपाय मोर्वी को चारों ओर से घेर लिया गया। युद्ध के डंके बज उठे। नवाब खान युद्ध करने मोर्चे पर आ डटा।

अभी मोरवी पर आक्रमण की तैयारियाँ हो ही रही थीं, कि दोनों कुमारों के कच्छ में आगमन की बात आग की भाँति समूचे कच्छ में फैल गई। चारों ओर से सामन्त, सरदार, गिरासिए, चाकर जो अब तक छुपकर चुप बैठे—समय की प्रतीक्षा कर रहे थे निकल कर खंगारजी से आ मिले। जाम रावण के अत्याचारों से पीड़ित बहुत सामन्त सरदार और प्रजावर्गीय तरुण गृहस्थ भी आ-आकर खंगारजी की जय-जयकार मनाने लगे। सबने नजर भेंट गुजारी। मुजरा किया और सब प्रकार अपनी आश्रयिता प्रकट की। ये सब नोधणजी की सरदारी में युद्ध सजा से सजित हुए। मोरवी पर आक्रमण हुआ। नवाब खान गोरी

के कामदार सारस्वत ब्राह्मण काला जोशी की जाम खान ने जिव्ह करा दी थी। उस बैर का बदला लेने के लिए जोशी का भांजा रुधो जोशी खंगारजी से आ मिला। और रात को मोरवी का द्वार खोल दिया। राव खंगारजी की सेना जयनाद करती हुई मोरवी में घुस गई। और मार-काट करती हुई नवाब खान के निवास स्थान में घुस गई। नवाब खान अपनी सेना को ललकार कर युद्ध करने आया। पर दो घड़ी के युद्ध में ही मर कर गिर गया। खान की सब सेना काट डाली गई। जो शरणागत हुए उन्हें नगर से निकाल बाहर किया गया। मोरवी पर राव खंगारजी का डंका बजने लगा।

मोरवी तावे होने पर खंगारजी ने मोरवी के महलों में अपना डेरा डाला। खान की बहुत सम्पदा उनके हाथ लगी। खान का जनानखाना सुरक्षित स्थान पर भिजवा दिया गया। यहीं अलैयाजी भी एक छोटी-सी सेना लेकर खंगारजी से आ मिले।

अब सबकी युद्ध मन्त्रणा बैठी। सबने यह निर्णय किया कि मोरवी कच्छ की सीमा पर होने के कारण महत्वपूर्ण स्थान है। और उसके हाथ में आने से खंगारजी के हाथ में एक स्थायी ठीआ आ गया था। परन्तु मोरवी में बैठकर जाम रावण से युद्ध करना सुविधाजनक न था। कारण एक तो अन्तर अधिक था। बीच में एक रेगिस्तान पड़ता था। वर्षा-ऋतु में वहाँ से कच्छ में प्रविष्ट होना दुष्कर था। इसलिये यह निर्णय किया गया कि जैसे बने सापर में थाना स्थापित किया जाय।

खंगारजी ने अपने भाई अलैयाजी तथा हाथी नौधड़ाजी को सापर के अबड़ा जाम के पास संदेश लेकर भेजा। अबड़ा जाम भी कुटिल मनुष्य था। उसने सब वार्ता सुनके कहा—आज रात आप लोग विश्राम कीजिए। मैं भोर में उत्तर दूँगा। उसके वचन पर विश्वास करके अलैया-जी तथा हाथी नौधणजी ने उसका आतिथ्य स्वीकार कर लिया पर रात

को उस विश्वासघाती ने अलैयाजी को सोते हुए मार डाला । नौधड़जी ने भागकर प्राण बचाए ।

सब समाचार सुन खंगारजी ने सापर पर चढ़ाई कर दी । परन्तु कायर अबड़ा जाम युद्ध न कर दाँत में तृण दाब खंगारजी की शरण आ गया । खंगारजी ने उसे शरणागत मान थोड़ा भाग जागीर का उसे रहने को देकर शेष पर अपना अधिकार कर लिया तथा सापर में अपना थाना स्थापित कर निकट ही सेना की छावनी डाली ।

यद्यपि खंगारजी ने अबड़ा को क्षमा कर दिया था, परन्तु हाथी नोधणजी जो अबड़ा का मौसेरा भाई था, उसने अबड़ा के विश्वासघात को क्षमा नहीं किया और अवसर पाकर उसे मार डाला । इससे सापर परगना को खालसा करके खंगारजी उसके सिंहासन पर बैठे और इस रियासत का नाम बदलकर रापर रखा । इस प्रकार मोरवी और सापर पर अधिकार करने से कच्छ का एक भाग खंगारजी के हाथ आ गया ।

३४

उन दिनों कच्छ में जागीरदारी प्रथा थी। सारे कच्छ में अनगिनत जागीरदार थे। वे सब कच्छ के जाम साहब को एक नियमित खिराज देते और अपनी जागीर में स्वतन्त्र सत्ता चलाते थे। इन जागीरदारों में खूब गुटबन्दी और आपसी ईर्ष्या-द्वेष भी चलता था। कभी-कभी वे परस्पर मार-काट कटा-कटी भी कर डालते थे। इस समय इनमें बहुत से जागीरदार जाम रावण के हिमायती थे, अब खंगारजी ने उन्हें ढूँढ़ ढूँढ़ कर मारना और उनकी जागीरों को जब्त करना आरम्भ कर दिया। इस सिलसिले में जाम रावण की भूमि को भी जहाँ बनता अपने कब्जे में कर लेते थे।

इन सब कार्यवाहियों से जाम रावण घबड़ा गया। वह अब खंगारजी से सम्मुख युद्ध की तैयारियाँ कर रहा था। और इस अवस्था में यह स्वाभाविक था कि वह अपने आधीन जागीरदारों से धन और सेना की

सहायता माँगे। परन्तु उसके पक्ष के सभी जागीरदारों पर खंगारजी का कहर ढहाया जा रहा था, अतः उनसे उसे कुछ भी सहायता प्राप्त न होती थी न हुई, और जाम रावण की स्थिति इतनी कमजोर हो गई कि वह सम्मुख युद्ध में खंगारजी का सामना करने का साहस न कर रहा था। उसकी कठिनाइयाँ दिन-दिन बढ़ती जाती थी।

एक ही बरस में खंगारजी ने इस प्रकार आधा कच्छ अपने अधिकार में कर लिया और जाम रावण को उनके सामने आने की हिम्मत न पड़ी।

इस समय मियाँ-मियाना भी २ हजार धनुर्धारी मियानाओं सहित उनसे आ मिलता था।

अब सब तरफ से चाक चौबन्द होकर खंगारजी ने जाम रावण की राजधानी पर छुट-पुट आक्रमण करने आरम्भ कर दिए। वह अपनी सेना के एक बड़े भाग को लेकर जाम रावण की राजधानी बाड़ा के निकट ही जा धमके। एक दिन उधर जाम रावण का खवास लालिया की सरदारी में पाँच सौ मनुष्य जाम रावण के घोड़ों को चराते हुए आ निकले। अवसर ताककर मियाँ ने जाम के सब घोड़े हाँक लिए और जाम के आदमियों को अपनी तीर कमान का शिकार बनाया। खंगारजी ने हँसकर वे घोड़े मियाँ मियाना ही को सौंप दिए और उसने अपनी सरदारी में मियाना तरुणों का एक घुड़सवार दल बना डाला। जो छोटी-छोटी टुकड़ी में बँटकर जाम रावण के राज्य में मार-धाड़, लूट-पाट करने और आग लगाने लगे। इससे जाम रावण के राज्य में हाहाकार मच गया। और लोग घर-बार छोड़कर भागने लगे।

३५

अंत में ठनाठनी की बेला आई । खंगारजी में और जाम रावण में जमकर भीषण युद्ध हुआ । दोनों पक्षों की सेनाएँ एक दूसरे का संहार करने लगीं । रक्त की नदी बह चली । पैदलों और सवारों के दौड़ने से धूल के बादलों से आकाश छा गया । जगह-जगह रुगड-मुगड कटकर गिरने लगे । वीर गण एक दूसरे को ललकार कर महायुद्ध करने लगे । सूर्योदय से प्रथम ही संग्राम छिड़ा । सारे दिन चार कोस की रणभूमि में संग्राम होता रहा । अन्त में सूर्यास्त होते-होते रावण की सेना भागने लगी । अन्धकार होने पर युद्ध बन्द कर दिया गया ।

दूसरे दिन रावण ने सुलह का सफेद झंडा अपने डेरे पर लगाया । और उसके दो घड़ी बाद वह प्यादा घोड़े से अंग-प्रत्यंगों तथा विश्वासपात्र कर्मचारियों सहित निःशस्त्र खंगारजी के शिविर में आया । दोनों ओर की सैन्य निस्तब्ध बनी देख रही थी । खंगार का सेनापति उसे खंगारजी

के तम्बू में ले गया। जाम रावण मुख में तृण दाब दोनों हाथ जोड़ मस्तक नवाकर खंगारजी के समक्ष खड़ा हो गया। उसके एक कर्मचारी ने आगे बढ़कर उसकी तलवार खंगारजी के चरणों में रख दी और रावण ने आधीन होकर प्राणों की भिक्षा माँगी।

खंगारजी ने उठकर जाम रावण को कण्ठ से लगाया और कहा—
“काका जी, आप हमारे पूज्य हैं। दुःख की बात है कि आप आज इस अवस्था में यहाँ उपस्थित हुए हैं। आप ही के दुष्कृत्यों ने आज आपको यह परामव का दिन दिखाया है। आपने यद्यपि विश्वासघात करके हमारे पूज्य पिता का हनन किया, जिससे हमारी माताओं को सती होकर प्राण गँवाने पड़े। हमें भी बड़े कष्ट का सामना करना पड़ा और आपने हमारे प्राण लेने में भी कोई कोर-कसर नहीं रखी, आपका अपराध ऐसा है कि सपरिवार आपको प्राण-दण्ड मिलना चाहिए। क्योंकि आपके इस कुकृत्य से हमारा कुल कलंकित हो गया। परन्तु आप हमारे शरणागत हुए हैं। हमारे नुरन्वी हैं, काका हैं। इसलिए हम शील-मर्यादा और कुलनाश के कलंक से बचने के लिए आपको प्राण-दान देते हैं। परन्तु हमारी आज्ञा है कि आज से दो दिन के भीतर आपकी जो कुछ भी निजी सम्पत्ति हो, उसे लेकर सपरिवार कच्छ राज्य से चले जाइए। और फिर कभी कच्छ राज्य में प्रवेश करने का साहस मत कीजिए। कच्छ से बाहर आप यदि अपनी कोई स्वतन्त्र राज्य सत्ता स्थापित करने में समर्थ हों तो कच्छ के राव का आप पर वर्चस्व कायम रहेगा। और आप के वंश में जब भी किसी का राज्याभिषेक होगा, कच्छ के राव का खाण्डा और सिरोधन यहाँ से मँगाना आप पर लाजिम होगा। इस आज्ञा के पालन में तनिक भी त्रुटि या भूल होने पर आपके वंश का समूल नाश कर दिया जायगा।”

जाम रावण ने मस्तक नवाकर करबद्ध होकर कहा—“मैंने अपनी तलवार आपके चरणों में रखकर अपना पराजय स्वीकार कर लिया है। और सदैव आपकी आज्ञा का पालन करता रहूँगा। मैं और मेरे

वंशज कच्छ के राव के ताबे-वफादार सामन्त की भाँति रहेंगे । परन्तु मैं आपकी सेवा में एक याचना करता हूँ कि इस समय कच्छ त्यागने से पूर्व मैं यदि किसी सेवक को कोई इनाम या दान देना चाहूँ तो आप कृपाकर उसे कायम रखें—और मेरा लेख अस्वीकार न करें । यह प्रार्थना मैं अपनी सत्ता या अधिकार से नहीं, नम्रता से करता हूँ । आपकी उदारता से मैं आपसे स्वीकार की प्रार्थना करता हूँ । खंगारजी ने उसकी यह प्रार्थना स्वीकार कर ली । जाम रावण ने खंगारजी का आभार माना । उसने पचास गाँव चारणों को इनाम जागीर दिए और अपने परिवार सम्पत्ति और चार हजार सैनिकों को लेकर नौका द्वारा कच्छ त्यागा । समुद्र यात्रा की । सम्पूर्ण कच्छ में खड्गारजी का अधिकार हो गया ।

३६

युद्ध में विजय लाभ कर खंगारजी अपने पैत्रिक घर लाखिर वियरा में आए। अपने माता पिता की समाधि निर्माण कराई। सब राज्य व्यवस्था की जाँच-पड़ताल की। शत्रु पर ऐसी उदारता प्रकट करने से उनकी कीर्ति का घर-घर बखान होने लगा।

अब सबकी सम्मति से उन्होंने अपने राज्याभिषेक की तैयारी की। अभिषेक समारोह की तिथि छै मास बाद की रखी, जिससे सब आवश्यक साधन जुटा लिए जायँ और दूर-दूर से सम्बन्धित जन बुला लिए जायँ। उन सबपर निमन्त्रण पत्र भेजे गए। दरबार की तैयारियाँ होने लगीं। इस बीच खङ्गारजी ने अपने ५०० अंग-रत्नों सहित समूचे कच्छ का दौरा किया—प्रजा से मिले-भेटे, उनके सुख-दुख की बात पूछी। उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति की।

अन्त में अभिषेक समारोह की बेला आई, सब सामन्त सरदार गिरासिए, कर्मचारी और मित्र उपस्थित हुए। नगर-राजद्वार सजाए गए। बड़े-बड़े कलावन्त, गुणी राजप्रसाद पाने आए। बहुत से भाट-चारण कवि जन तथा विद्वानों की भीड़ जुट गई।

द्वार के आरम्भ में, अभिषेकोपचार सम्पन्न होने के बाद सुलतान मुहम्मद बेगड़ा के प्रतिनिधि ने कहा—“कच्छ के अखण्ड प्रौढ़ प्रताप, गो ब्राह्मण प्रतिपालक राव श्री खज्जारजी बहादुर और उनके राजपूत अधिकारियों, नागरिकों, अतिथियों, अहमदाबाद के नामदार सुलतान महमूद बेगड़ा साहेब कच्छ के महाराव खज्जारजी के सम्बन्धी हैं। तथा उनके उपकार भार के कारण कृतज्ञ हैं। उनकी महाराव श्री पर अत्यन्त प्रीति है। उन्हें खेद है कि वृद्धावस्था तथा शरीर अस्वस्थ रहने के कारण वे स्वयं आज यहाँ उपस्थित नहीं हैं। उन्होंने मुझे ये रत्नाभरण पोशाक सिरोपाव, शस्त्रास्त्र, पगड़ी और शाल की खिलअत तथा भेट देकर भेजा है। सुलतान महाराव खज्जार जी के तख्त व ताज की सलामती के इच्छुक हैं। और सुलतान सलामत हमेशा राव साहेब की जाहो जलाली के लिए खुदाबन्द करीम से दुआ मांगते हैं।”

सभा में हर्ष-ध्वनि हुई।

अब राव श्री खंगारजी ने खड़े होकर कहा—“मान्य अतिथियों, और मेरे स्वामिभक्त कर्मचारियों तथा राजभक्त प्रजाजनों और मेरे उपकारकों, आज आप सबकी कृपा से ही यह मङ्गल अवसर प्रस्तुत हुआ है। हमें संकट काल में सहायता देने में जिन-जिन महानुभावों ने योग दिया है—मैं उनका आभार मानता हूँ। उनकी कृपा और सहायता यदि न मिली होती तो आज मुझे यह दिवस देखने को मिलना अशक्य था। इन महानुभावों के उपकारों का बदला नहीं चुकाया जा सकता, पर कृतज्ञता स्वरूप यत्किंचित सत्कार करने की मेरी अभिलाषा

है। हमारे पिता के स्वामिनिष्ठ सेवक हमारे प्राण रक्त छच्छर काका को उनकी सेवा के उपलब्ध में मैं सात गाँव अर्पण करता हूँ। जो वंश परम्परा तक उनके वंशज भोग करेंगे। मियाना मियाँ कक्कल—जिन्होंने मेरी और मेरे भाई की रक्षा में अपने सात पुत्रों का बलिदान दिया, उन्हें बारह गाँव तथा अपनी पुरानी पदवी जाम अर्पण करता हूँ। हमारी यह भी आज्ञा है कि उनके वंशज कच्छ में चाहे भी जो अपराध करें, तो भी उन्हें काठ में नहीं दिया जायगा। मेरी इस आज्ञा का पालन मेरे वंशज भी करते रहेंगे। शिवजी लुहाणा ने जाम रावण का कर्मचारी होने पर भी धर्म और न्याय का विचार करके दो-दो बार हमारे प्राणों की रक्षा की। और अपने जीवन की जोखिम उठाई। उन्हें चार गाँव और उनकी पुरानी जागीर तथा चाकरी कायम रखने की आज्ञा देता हूँ। तथा उन्हें दरबार में बैठने की इज्जत भी प्राप्त होगी। वाई पार्वती वाई, जिसने केवल जन्मभूमि की सन्तान होने के नाते मुझ पर अपूर्व प्रीति प्रदर्शित की, और हमारा सत्कार किया—उसे मैं अपनी धर्म बहिन की पदवी तो प्रथम ही दे चुका हूँ, अब कपड़े के तौर पर आठ गाँव देता हूँ, और प्रार्थना करता हूँ कि वह अपने पति और परिवार सहित हमारे कच्छ देश में ही आकर बस जाय। भ्रांङ्गधरा के सेठ ने हमें थोड़ा रुपया उधार देकर तथा भोजन देकर हमारी सहायता की थी—उसे २५ हजार कोरी भेंट करता हूँ। साथ ही पोशाक भी देता हूँ।

अब केवल दो व्यक्ति रह गए, जिनका मुझपर हिमालय के समान महान उपकार है। एक हमारे पूज्य श्वसुर जालिमसिंह जी हैं। उनका जामाता होने के कारण वे हमारे पास से कुछ भी स्वीकार नहीं करेंगे। उन्हें मैं अपने खानदान का बुजुर्ग मानकर प्रणाम ही अर्पण करता हूँ।

दूसरे महानुभाव अहमदाबाद के नामदार सुलतान खुदाबन्द हैं।

उन्हें कुछ देने की धृष्टता करना उनका अपमान करना है। इसलिए उनकी पूजा स्वरूप एक थाल मिश्री भरा उन्हें उनके प्रतिनिधि द्वारा भिजवा रहा हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि उनकी हम पर सदैव ऐसी की कृपा बनी रहे। सुलतान के प्रतिनिधि को सिरोपाव खिलश्रत देता हूँ। अन्त में परमात्मा के चरणों में मेरा यह निवेदन है कि वह राजदण्ड हाथ में लेकर न्याय करने की सामर्थ्य हमारे हाथों में दें। तथा हम निष्पक्ष भाव हो धर्म से प्रजापालन करते रहें। इतना कह कर खंगारजी बैठ गए।

चारो तरफ से धन्य-धन्य की आवाजें गूँज उठीं। जय-जयकार से आकाश ध्वनित हो उठा। इसके बाद कवि-भाट-नर्तक-वेश्या कलाकारों ने अपने-अपने कर्तब दिखाए और सबको उपयुक्त इनाम बख्शीस देकर दबोर बरखास्त हुआ।

समाप्त

उपसंहार

राव खंगारजी ने दीर्घकाल तक कच्छ का राज्य भोगा । उन्होंने भुज नगर बसाया और उसे अपनी राजधानी बनाई, जो आज भी कच्छ की राजधानी है । उन्होंने अजार नगर भी बसाया और पूर्व राजधानी लाखियार वियरा चारणों को दान कर दी ।

जाम रावण ने कच्छ से निकलकर दहिसरा गाँव में मुकाम किया । और वहाँ रहकर उसने धीरे-धीरे जेठवा वंश के ठाकुरों की भूमि छीनकर खंभालिया में अपना राज्याभिषेक किया और जाम नगर नाम का नया नगर बसाकर उसे ही अपनी राजधानी बनाया । आज भी उस वंश के राजा जाम नगर के जाम साहेब कहाते हैं ।

खंगारजी बड़े कर्मशील, न्यायी और प्रजावत्सल नरेश प्रसिद्ध हुए । वह समय ऐसा था कि युद्ध और अशान्ति निरन्तर बनी रहती थी । खंगारजी को भी निरन्तर युद्ध करने पड़े । कालान्तर में सुलतान बेगड़ा और कमा बाई का देहान्त हो गया । कमा बाई के भाई अलैयाजी का स्वर्गवास प्रथम ही हो चुका था । अब एक युद्ध में सायबजी भी खेत रहे । इस प्रकार खंगारजी की आयु जैसे-जैसे आगे बढ़ती गई—एक के बाद एक शोक-चिन्ह उनके हृदय पर अंकित होते गए ।

खंगारजी के भोजराज और भारमल्ल नामक दो पुत्र हुए । युवराज भोजराज का भी एक समर में स्वर्गवास हो गया । वृद्धावस्था में यह आघात खंगारजी को अत्यन्त असह्य हुआ और संवत् १६४२ में ज्येष्ठ मास में ६० वर्ष की अवस्था में उन्होंने शरीर त्याग दिया ।

